**LOPE DE VEGA  
*Los Tellos de Meneses***

Personajes:

|  |  |
| --- | --- |
| *TELLO EL VIEJO* |  |
| *TELLO, su hijo* |  |
| *MENDO, gracioso* |  |
| *SANCHO, villano* |  |
| *DON NUÑO* |  |
| *FORTÚN, labrador* |  |
| *AIBAR, labrador* |  |
| *DON RAMIRO* |  |
| *BATO, villano* |  |
| *LAURA, labradora* |  |
| *INÉS, villana* |  |
| *ORDOÑO I, rey de León* |  |
| *DOÑA ELVIRA infanta* |  |
| *SILVIO* |  |
| *BENITO* |  |
|  |  |
| *CRIADOS* |  |

**Acto I**

|  |  |
| --- | --- |
| **I** | |
|  | |
| *Habitación de la infanta en el real alcázar de León INFANTA DOÑA ELVIRA, DON NUÑO* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Parecerá loca acción |  | | a quien la virtud ignora. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | ¡Extraña resolución |  | | en una heroica señora, |  | | hija de un rey de León! | 5 | | Otros medios puede haber. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Ansí pienso defender, |  | | cauta, mi honor y decoro, |  | | al quererme hacer de un moro |  | | un rey cristiano mujer. | 10 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | Ejemplos hay conocidos |  | | de mujeres que supieron |  | | reducir a sus maridos, |  | | y que a la fe los trujeron |  | | los brazos y los oídos. | 15 | | Tal con el rey de Valencia |  | | tu hermosura y tu prudencia, |  | | señora, pudieran ser, |  | | y al mayor ejemplo hacer, |  | | si no igualdad, competencia. | 20 | | Casa con él, que, aunque moro, |  | | en las virtudes sin fe |  | | es un archivo, un tesoro; |  | | y aunque fuera della esté, |  | | sabrá guardarte decoro. | 25 | | Hace el rey esta amistad |  | | por ganar la voluntad |  | | del de Córdoba y Toledo, |  | | no porque les tiene miedo, |  | | por mayor seguridad | 30 | | que nadie se ha de mover |  | | en siendo Tarfe su yerno. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Primero pudiera ser |  | | volverse gloria el infierno |  | | que ser de Tarfe mujer. | 35 | | En lugar de flores bellas, |  | | Nuño, nacerán estrellas, |  | | y los peces de los ríos |  | | trocarán sus centros fríos |  | | al manto que esmaltan ellas. | 40 | | Primero el feroz denuedo |  | | del arrogante león |  | | tendrá de un cordero miedo, |  | | será firme la ocasión, |  | | y se estará el tiempo quedo. | 45 | | Cesarán la competencia |  | | los elementos furiosos |  | | de su inmortal resistencia, |  | | y no tendrán envidiosos |  | | privanza, virtud ni ciencia. | 50 | | Será la flaqueza fuerte, |  | | tendrá venturosa suerte |  | | el bien con la ingratitud, |  | | enfadará la salud |  | | y será dulce la muerte. | 55 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | ¿Resuelta en efeto estás |  | | de que el conde castellano |  | | te favorezca? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Hoy verás |  | | del moro el intento vano, |  | | y el de mi padre, que es más. | 60 | | No juzgues a desvarío, |  | | Nuño, el pensamiento mío: |  | | siendo forzoso ausentarme, |  | | nadie puede remediarme |  | | mejor que el conde, mi tío. | 65 | | Heme fiado de ti, |  | | de tu valor confiada, |  | | para defenderme ansí; |  | | que yo sé que iré guardada |  | | de ti mejor que de mí. | 70 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | ¡No me tengan por traidor |  | | acompaño en tu error! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | No es error hacer defensa |  | | una mujer en la ofensa |  | | de su virtud y su honor. | 75 | | Fara cegó de llorar |  | | por no se querer casar; |  | | y fue de alabanza dina |  | | huyendo a un padre Eufrosina, |  | | a quien pretendo imitar. | 80 | | En hábito de varón |  | | huyó Eugenia, y yo he tenido |  | | para huir más ocasión |  | | de un rey de León, que ha sido, |  | | para mí, rey y león. | 85 | | A punto mis joyas tengo; |  | | que los sucesos prevengo |  | | que temo, aunque no los sé, |  | | pues que por guardar la fe |  | | a tantas fortunas vengo. | 90 | | Si como Cecilia fuera, |  | | algún ángel esperara |  | | que mi virtud defendiera, |  | | porque ese moro dejara |  | | su ley tan bárbara y fiera. | 95 | | Mucho del cielo confío, |  | | de mí no, Nuño; y ansí |  | | intento tal desvarío. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | Para servirte nací, |  | | blasón de mi sangre y mío. | 100 | | Mira a la hora que quieres |  | | que venga por ti, pues eres |  | | quien se vale de mi nombre; |  | | que nace obligado un hombre |  | | a defender las mujeres. | 105 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Cuando se ponga la luna, |  | | que medianoche será. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | Vendré sin falta ninguna, |  | | en un caballo, en que ya |  | | corramos los dos fortuna. | 110 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Pues por el parque saldré. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | Y yo a la puerta estaré. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Aunque es hazaña atrevida, |  | | más quiero perder la vida |  | | que no aventurar la fe. | 115 | | | |
|  | |
| *Vanse* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **II** | |
|  | |
| *Vista exterior de la casa de los Tellos, en las montañas de León TELLO, vestido de gala, con aderezo dorado y plumas; LAURA* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Finalmente, ¡no he podido |  | | guardarme de ti! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | De amor |  | | ¿quién puede?, y más si el temor |  | | de ausencia promete olvido. |  | | Y de la suerte que vas, | 120 | | vestido a lo cortesano, |  | | ¿no ves que encubres en vano |  | | los enojos que me das? |  | | Que entre esperanza y temor |  | | vivo con tantos recelos, | 125 | | que me avisaran los celos |  | | cuando se durmiera amor. |  | | ¿Cómo te has vestido ansí? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Prima, aunque Tello, mi padre, |  | | es labrador, por mi madre | 130 | | hidalgo y noble nací; |  | | y él en toda la montaña |  | | de León siempre ha tenido |  | | fama de ser bien nacido, |  | | y de los godos de España. | 135 | | Pues ¿qué quiere de un mancebo |  | | como yo? ¿No es poco honor |  | | de los dos ser labrador? |  | | Por dicha, ¿en el mundo es nuevo |  | | que quien tiene hacienda emprenda | 140 | | ser algo más de lo que es? |  | | ¿En qué desatinos ves |  | | que le gasto mal su hacienda? |  | | ¿Es mucho que a la ciudad |  | | vaya como hombre de bien, | 145 | | adonde los que me ven |  | | conozcan mi calidad? |  | | ¿Quién culpa lo que no pasa |  | | de un honrado pensamiento? |  | | ¿Tengo de ir en un jumento, | 150 | | como un villano de casa? |  | | En ella, gracias a Dios, |  | | afeitan la yerba a un prado, |  | | cien yeguas: pues mi criado |  | | y yo ¿es milagro que en dos | 155 | | vamos a ver la ciudad |  | | y a comprar alguna cosa? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | A no dejarme celosa |  | | del traje la novedad |  | | y de León la hermosura, | 160 | | tu pensamiento aprobara. |  | | Galán, es cosa muy clara |  | | que harás alguna locura. |  | | Tú gracias, yo pocas dichas, |  | | ¿qué espero, pues de las galas | 165 | | nacen a los hombres alas |  | | y a las mujeres desdichas? |  | | Fuera desto, si en León |  | | ves las damas cortesanas |  | | o en visitas o en ventanas, | 170 | | donde con tal perfección |  | | está el adorno y el traje, |  | | que en ángeles las convierte, |  | | después ¿qué ha de parecerte |  | | nuestro rudo villanaje? | 175 | | Una mujer que consejo |  | | pide, al tocarse, a una fuente, |  | | no a un mar de cristal enfrente, |  | | que es más lisonja que espejo, |  | | ¿qué podrá ser para ti | 180 | | cuando vuelvas de León? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Prima, lo mismo que son |  | | los prados en que nací, |  | | con su natural belleza, |  | | no los jardines del arte; | 185 | | porque es en aquella parte |  | | madrastra Naturaleza. |  | | Deja celos excusados, |  | | porque me pone temor |  | | mostrarme tanto rigor | 190 | | antes de estar desposados. |  | | ¿Qué dejas para después, |  | | si esto me dices agora? |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **III** | |
|  | |
| *TELLO EL VIEJO, INÉS, dichos* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Bien lo sabe mi señora, |  | | pues le llamó |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Espera, Inés. | 195 | | ¡Qué buena conversación! |  | | ¿Tú con gente cortesana, |  | | Laura? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Cogióme: por Dios, |  | | que le avisaron que estaba |  | | de partida a la ciudad. | 200 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | La vista o la edad te engaña; |  | | con Tello, mi primo, estoy. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  | | --- | | ¿Quién es Tello? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¿No le acabas |  | | de conocer? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo puedo? |  | | Que Tello mi hijo, Laura, | 205 | | es labrador como yo, |  | | aunque de aquestas montañas |  | | el más bien nacido y rico, |  | | y habrá dos horas que andaba |  | | con un gabán y un sombrero | 210 | | tosco, abarcas y polainas. |  | | ¡Hijo yo con seda y oro, |  | | espada y daga dorada, |  | | plumas y más aderezos |  | | que una nave tiene jarcias? | 215 | | No creas tú que es mi hijo. |  | | Caballero, ¿dónde pasa? |  | | ¿Es cazador deste monte? |  | | ¿Perdióse acaso? ¿No habla? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué tengo de hablar, señor, | 220 | | si desta suerte me tratas? |  | | Quien te avisó, mejor fuera |  | | que este enojo te excusara. |  | | ¿Es mucho que a la ciudad |  | | un hijo de un hombre vaya | 225 | | tan principal como tú, |  | | y que ha de heredar tu casa, |  | | en traje que lo parezca? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Y ¿es justo que en esas galas |  | | gastes con tanta locura | 230 | | el dinero que no ganas? |  | | ¿En qué está la diferencia |  | | de la nobleza heredada, |  | | al oficial o al que cuida |  | | de su cuidado y labranza? | 235 | | En que el uno vista seda |  | | y el otro una jerga basta, |  | | que basta para su estado, |  | | pues ella dice que basta. |  | | La carroza del señor, | 240 | | que cuando el techo levanta, |  | | descubre los arcos de oro |  | | con las cortinas de grana, |  | | ¿no ha de tener diferencia |  | | a un carro con seis estacas, | 245 | | cuatro mulas por frisones, |  | | su mismo pelo por franjas, |  | | que, cuando mucho, a una fiesta |  | | lleva en un cielo de caña |  | | algún repostero viejo | 250 | | con las armas de otra casa? |  | | ¿Beber en cristal es poco, |  | | o de algún arroyo el agua |  | | con la mano, que le vuelve |  | | la mitad desde la barba; | 255 | | comer en plata o en barro, |  | | supuesto que más se gasta, |  | | pues nunca de su valor |  | | faltó la plata quebrada? |  | | ¡Ay Tello!, la perdición | 260 | | de las repúblicas causa |  | | el querer hacer los hombres |  | | de sus estados mudanza. |  | | En teniendo el mercader |  | | alguna hacienda, no para | 265 | | hasta verse caballero, |  | | y al más desigual se iguala. |  | | ¿Qué hijo de un oficial |  | | lo mismo que el padre trata? |  | | De aquí nace aquella mezcla | 270 | | de cosas altas y bajas, |  | | que los matrimonios ligan, |  | | con que sangres y honras andan |  | | revueltas; de aquí los pleitos, |  | | las quejas y las espadas. | 275 | | Hidalgo naciste, hijo; |  | | pero entre aquestas montañas, |  | | de un labrador que ha vivido |  | | del fruto de cuatro vacas, |  | | seis ovejas y dos viñas. | 280 | | Dejad al señor las galas |  | | y a los soldados las plumas; |  | | volved al paño y la abarca; |  | | que yo soy mejor que vos, |  | | y tal vez los pies me calzan | 285 | | por el riguroso enero |  | | las nieves de las montañas, |  | | y en junio las canas cubre |  | | algún sombrero de paja; |  | | que de agradecido al trigo, | 290 | | la pongo sobre estas canas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¡Quién pudiera persuadir, |  | | padre mío, con palabras |  | | a los años, que se olvidan |  | | de lo que por ellos pasa! | 295 | | No hay hombre anciano que crea |  | | que caminó la jornada |  | | de la vida en aquel brío, |  | | cuando el que tuvo le falta. |  | | Conozco que han sido exceso | 300 | | de un labrador estas galas; |  | | pero no de un hijo vuestro, |  | | que sois rey destas montañas. |  | | Si fuérades labrador |  | | de aquellos que cavan y aran, | 305 | | no pudiera a vuestra queja |  | | satisfacer mi ignorancia; |  | | pero si cuando del cielo |  | | en copos la nieve baja, |  | | no cubre más destos montes | 310 | | que con las guedejas blancas |  | | vuestro ganado menor: |  | | y si de ovejas y cabras |  | | parecen los prados pueblos, |  | | y yerba y agua les falta; | 315 | | si tenéis de plata y oro |  | | tantos cofres, tantas arcas, |  | | y tiran cien hombres sueldo |  | | de vuestra familia y casa, |  | | ¿por qué os engañó la edad | 320 | | en decir que lo que acaba |  | | las ciudades es hacer |  | | los hombres tales mudanzas? |  | | El que su casa no aumenta, |  | | y la deja como estaba, | 325 | | no es hombre digno de honor, |  | | antes de perpetua infamia. |  | | ¿Para qué camina un hombre |  | | tanto mar sobre una tabla, |  | | para qué estudia y pelea, | 330 | | sino para que su fama |  | | aumente a su casa el nombre? |  | | Que si el mundo se quedara |  | | en el oficio de Adán, |  | | Naturaleza, afrentada, | 335 | | se corriera de mirar |  | | por muros y torres altas, |  | | por palacios, por ciudades, |  | | montones de trigo y paja. |  | | No hubiera ciencias, no hubiera | 340 | | quien el mundo gobernara, |  | | ni pinturas ni esculturas, |  | | sedas, piedras, oro y plata. |  | | Fue divina providencia |  | | para las cosas humanas | 345 | | diversas inclinaciones; |  | | y por eso a nadie espanta |  | | que aprenda un hombre a empedrar, |  | | pudiendo desde su infancia |  | | aprender artes que en oro | 350 | | piedras preciosas engastan. |  | | Yo, en efeto, padre mío, |  | | no me inclino a cosas bajas; |  | | si os cansan mis pensamientos, |  | | a mí los vuestros me agravian. | 355 | | A Ordoño, rey de León, |  | | hace guerra el de Granada; |  | | con alistarme soldado |  | | vendrán bien plumas y galas. |  | | Ni os gastaré vuestra hacienda | 360 | | ni oiré tan viles palabras; |  | | que si vos estáis contento |  | | del campo y de su ganancia, |  | | yo aspiro a cortes de reyes |  | | y a ennoblecer vuestra casa. | 365 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Oye, Tello; Tello, escucha. |  | | *Vase TELLO* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **IV** | |
|  | |
| *TELLO EL VIEJO, LAURA, INÉS* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Él tiene mucha razón. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Tan poca reprehensión |  | | le cansa? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | No es sino mucha. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Ayuda tú, por tu vida; | 370 | | anda, di que no se vaya. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo es posible que haya |  | | quien estorbe su partida? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Pues yo iré; que por ventura |  | | tendrá respeto a quien soy, | 375 | | si no a tu amor. |  | | *Vase* |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¡Buena estoy! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Si estás de su amor segura, |  | | ¿qué importa que vaya Tello |  | | a la ciudad? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Nadie amó |  | | segura. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Presumo yo | 380 | | que con un sutil cabello |  | | le atarás y le tendrás. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **V** | |
|  | |
| *MENDO, LAURA, INÉS* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Está acá nuestro amo el mozo? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Cayóse el gozo en el pozo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Qué dices? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Que no te vas. | 385 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Engáñaste; que ha de ser |  | | lo que Tello una vez dice, |  | | si el mundo lo contradice. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Pues esta vez no has de ver |  | | la ciudad, Mendo alcahuete. | 390 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Yo alcahuete? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿quién es |  | | el que le lleva? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Yo, Inés! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Buen castigo te promete |  | | Señor por esas maldades. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Sí, Mendo, culpado estás; | 395 | | que, como a la corte vas, |  | | a que vaya le persuades, |  | | contándole lo que ves. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Qué veo yo? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Mil mujeres, |  | | pintándolas como quieres | 400 | | de la cabeza a los pies. |  | | Y todo es linda invención; |  | | porque ¿qué puedes tú ver |  | | mientras llevas a vender |  | | trigo, cebada y carbón? | 405 | | Desnuda lo cortesano, |  | | vuelve al capote. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Por Dios, |  | | que me tratáis bien las dos! |  | | Esto de serviros gano. |  | | ¿Quién dice a Tello, quién cuenta | 410 | | tus gracias? ¡Qué lindo humor! |  | | ¿Quién le anima a mi señor |  | | al casamiento que intenta? |  | | ¿Quién te pinta cuando al día |  | | sirves de alba al levantarte? | 415 | | ¿Quién, cuando vas a acostarte, |  | | tu cubierta bizarría? |  | | ¿Quién le dice, como yo, |  | | Laura, que te guarde fe? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Hoy, Mendo, yo te escuché | 420 | | donde ninguno me vio, |  | | cuando a Tello le dijiste: |  | | «No es tu valor para el monte: |  | | déjale, alégrate, ponte |  | | galas, colores te viste. | 425 | | Una tosca montañesa |  | | que consultó para erizo |  | | Naturaleza, y la hizo |  | | en el molde de una artesa, |  | | como un zapato de lazo | 430 | | como un medio celemín, |  | | sobre la ceja el garbín, |  | | la cola en el espinazo, |  | | ¿qué tiene que ver con ver |  | | una coluna de nieve | 435 | | en tres puntos de un pie breve? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Yo lo dije? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Y hay mujer, |  | | perro, que tiene los pies |  | | como bonete doblado. |  | | Pues si alabar el calzado | 440 | | hoy escucharas, Inés, |  | | medias, zapatillo y liga, |  | | a Venus imaginaras. |  | | Todas tienen lindas caras: |  | | no hay mujer de quien no diga | 445 | | que es un serafín, un cielo, |  | | como de la corte sea: |  | | infierno llama a la aldea. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Bien pagas, Laura, mi celo! |  | | Yo tengo la culpa, yo, | 450 | | porque alabo, estimo y quiero |  | | aquel tomillo salsero |  | | con que este monte os crió: |  | | el oler a flor de espinos |  | | por abril en las orillas | 455 | | de los ríos, no a pastillas |  | | de esos ámbares divinos, |  | | que han dado a tantas mujeres |  | | mal de madre y a los hombres |  | | tanto enfado, y otros nombres | 460 | | que impidan vuestros placeres. |  | | ¿Quién vuestra limpia hermosura |  | | y vuestra tez encarnada, |  | | tiesa y firme como espada, |  | | sin pelo ni quebradura; | 465 | | aquel lavarse a dos manos, |  | | un caldero por espejo; |  | | el querer al tiempo viejo, |  | | y el pedir sin pasamanos; |  | | aquel blanco delantal | 470 | | con mil randas y labores, |  | | en que puede coger flores |  | | la misma aurora oriental; |  | | ¿quién lo alaba y encarece |  | | como yo? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Ya he conocido | 475 | | tus lisonjas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Quien ha sido |  | | la causa, esto y más merece. |  | | Pero yo lo enmendaré |  | | con llevalle a la ciudad, |  | | para que sea verdad. | 480 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Y yo a señor le diré |  | | cómo eres perro de muestra |  | | de Tello, el ventor y hurón |  | | de sus damas, destruición |  | | suya y de la hacienda nuestra; | 485 | | que eres el que vende el trigo |  | | que le hurtáis, y aun el dinero... |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | Escucha, Laura. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | No quiero: |  | | hoy cuanto pasa le digo. |  | | *Vase* |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | Inés, deténla. | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INÉS | |  | | --- | | ¿Yo? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues? | 490 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Mal conoces el estado |  | | a que conmigo has llegado. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Oye una palabra, Inés. |  | | | |
|  | |
| *Vase INÉS* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **VI** | |
|  | |
| *MENDO, solo* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Más quiero oír un vos, más un desprecio |  | | de quien ayer en baja mar vivía; | 495 | | más por fuerza escuchar mala poesía, |  | | y a un sordo, oyendo yo, que me hable recio; |  | | más quiero ver a la virtud sin precio, |  | | sufrir de un ignorante la porfía, |  | | querer una mujer que tenga tía, | 500 | | hablar a un bobo y respetar a un necio; |  | | más quiero consentir de un estudiante |  | | el frío verso y bachillera prosa, |  | | con mucha presunción, siendo ignorante; |  | | más los melindres de una necia hermosa, | 505 | | y que en falsete un barbinegro cante, |  | | que resistir una mujer celosa. |  | | *Vase* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **VII** | |
|  | |
| *Sala en el alcázar de León REY ORDOÑO, DON RAMIRO, CRIADOS* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | ¿A qué podrá llegar mi desventura? |  | | O ¿qué podrá servirme de remedio? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RAMIRO | |  |  | | --- | --- | | Señor, el cuerdo el último procura; | 510 | | que la paciencia es saludable medio |  | | para curar los males imposibles. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | ¡Fuerte elección, si está la muerte en medio! |  | | ¡No fueran mis desdichas insufribles, |  | | Ramiro, a no ser yo la causa dellas; | 515 | | que esto las hace justas y invencibles. |  | | Si yo culpar pudiera a las estrellas, |  | | o a un loco amor, que el más real decoro |  | | suele vencer cuando faltaran ellas, |  | | remedio hallara en el dolor que lloro; | 520 | | mas no le puede haber faltando Elvira, |  | | porque, cristiano, quise darla a un moro. |  | | Mas quien el corazón penetra y mira, |  | | sabe que fue mi intento confianza |  | | de que al bautismo el de Valencia aspira. | 525 | | ¿Qué dice Blanca, en fin? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RAMIRO | |  |  | | --- | --- | | Que la esperanza |  | | es vana de buscarla, a lo que piensa, |  | | si vive ya donde el poder no alcanza; |  | | pues, viendo que era débil la defensa |  | | con que pudiera resistir tu gusto, | 530 | | como era darla por mujer a un hombre |  | | que, no siendo cristiano, fuera injusto, |  | | salió con diferente hábito y nombre, |  | | donde tienen por cierto que se ha muerto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | ¿A quién habrá que mi dolor no asombre? | 535 | | Sin duda, de las fieras del desierto |  | | sepulcro es ya, pues no parece en cuanto |  | | se ha buscado, inquirido y descubierto. |  | | Que Porcia del amor aplaque el llanto |  | | comiendo brasas; que Lucrecia el pecho | 540 | | al hierro entregue, no me causa espanto, |  | | ni reducida a punto tan estrecho, |  | | darle Cleopatra a un áspid, ni el ardiente |  | | de Dido y Fedra en lágrimas deshecho; |  | | pero que una mujer cristiana intente | 545 | | matarse, ¿a quién no causa maravilla? |  | | ¡Desesperada, infiel, inobediente!... |  | | ¿Qué ha respondido el conde de Castilla? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RAMIRO | |  |  | | --- | --- | | Lo que todos responden admirados. |  | | En fin, ningún lugar, ciudad ni villa | 550 | | dejó de verse en todos sus estados; |  | | ni el de Navarra sabe cosa alguna. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | Quitaránme la vida mis cuidados. |  | | No me quiero quejar de mi fortuna; |  | | castigo fue del cielo mi imprudencia. | 555 | | Disculpa no podrá tener ninguna, |  | | ni mal tan grande permitir paciencia. |  | | | |
|  | |
| *Vanse* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **VIII** | |
|  | |
| *Montes de León INFANTA, DON NUÑO, con una caja de joyas* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Suelta las joyas, villano, |  | | ya que me dejas ansí. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | Pienso, Elvira, que de mí | 560 | | te vienes quejando en vano, |  | | pues pudiendo ser tirano |  | | de tu más noble tesoro, |  | | y no como indigno moro, |  | | sino como noble hidalgo, | 565 | | de tanto peligro salgo, |  | | libre tu honor y decoro; |  | | que en este monte pudiera, |  | | dando lugar al deseo, |  | | hacer que del vil Tereo | 570 | | menor la tragedia fuera, |  | | y esta montaña tuviera |  | | otra Filomena hermosa, |  | | más desdichada y quejosa; |  | | pues si te dejo el honor, | 575 | | ¿qué joyas tienen valor |  | | que igualen la más preciosa? |  | | Acompañarte no ha sido |  | | traición, pues que fue ampararte; |  | | la traición fuera forzarte, | 580 | | a tu grandeza atrevido. |  | | Mi honor, mi patria he perdido: |  | | si es ansí, forzoso es, |  | | para librarme después |  | | entre moros y cristianos, | 585 | | llevar el oro en las manos, |  | | que son los mejores pies. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Aunque las joyas te pido, |  | | no es por ellas mi interés; |  | | por una sortija es | 590 | | que del rey, mi padre, ha sido; |  | | que, aunque tanto me ha ofendido, |  | | le tengo notable amor. |  | | Cosa es de poco valor. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | NUÑO | |  | | --- | | ¿Es la desta sierpe? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Sí; | 595 | | que de un diamante y rubí |  | | tiene en la boca una flor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | Toma; que aunque ésta tuviera |  | | *(Dale una sortija)* |  | | el valor de las demás, |  | | no te negara jamás | 600 | | cosa que tu gusto fuera. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | No me dejes sola, espera, |  | | en tan ásperas montañas; |  | | llévame a aquellas cabañas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | Seré, Elvira, conocido | 605 | | por autor, como lo he sido, |  | | de tan infames hazañas. |  | | Quien ha tenido valor |  | | para venir desta suerte, |  | | no teme, Elvira, la muerte, | 610 | | pues no ha temido el honor. |  | | Donde me lleva el temor |  | | voy arrepentido y triste; |  | | confieso que me pusiste |  | | una esperanza, que fue | 615 | | por donde hasta aquí llegué |  | | con la ocasión que me diste. |  | | Codicia de tu belleza |  | | me dio causa aquella tarde; |  | | pero rendíla, cobarde, | 620 | | a los pies de tu grandeza; |  | | que no pudo mi bajeza |  | | tener tan altos despojos, |  | | ni atreverme a darte enojos |  | | pude en ocasión igual; | 625 | | que la hermosura real |  | | tiene deidad en los ojos. |  | | Cuantas veces me incitaba |  | | un pensamiento amoroso, |  | | tantas de tu rostro hermoso | 630 | | la grave luz me cegaba. |  | | Quien en tal batalla estaba, |  | | bien hace en dejarte, a efeto |  | | de que el temor más discreto, |  | | tratándote, fuera ingrato; | 635 | | que es tan poderoso el trato, |  | | que a nadie guarda respeto; |  | | que si algo suele perder, |  | | contra las humanas leyes, |  | | respeto, Elvira, a los reyes, | 640 | | sólo el trato puede ser. |  | | Túrbase quien llega a ver |  | | de un rey la deidad severa, |  | | como su ser considera, |  | | y el más sabio se recata; | 645 | | pero quien los sirve y trata, |  | | ni se muda ni se altera. |  | | Yo parto, en fin, vitorioso |  | | de mí mismo, y tan leal, |  | | que dejo ocasión igual | 650 | | al más cuerdo o más dichoso. |  | | Lo que me trujo animoso, |  | | determinado en secreto, |  | | me vuelve necio y discreto. |  | | Perdona, y quédate aquí; | 655 | | que voy huyendo de ti |  | | por no perderte el respeto |  | | *Vase* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **IX** | |
|  | |
| *LA INFANTA, sola* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Hurta los rayos al dorado hermano, |  | | para vestirse de su luz, la luna; |  | | sin mirar otra palma, de ninguna | 660 | | cortó racimos de oro el africano. |  | | Gime la tortolilla, y gime en vano, |  | | cuando el esposo que murió importuna; |  | | sin dueño no hay en monte fiera alguna, |  | | ni vida alegre en el discurso humano. | 665 | | De la suerte que el alma al cuerpo informa, |  | | es como la primera inteligencia |  | | materia la mujer, el hombre forma. |  | | Y tanto nos ampara su presencia, |  | | y así su forma nuestro ser conforma, | 670 | | que siendo éste traidor, siento su ausencia. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **X** | |
|  | |
| *UN VILLANO, LA INFANTA* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | VILLANO | |  | | --- | | *(Canta dentro)* | | Triste está la infanta Elvira, |  | | días ha que no se alegra; |  | | que la casa el rey, su padre, |  | | con el moro de Valencia. | 675 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Aquí llegan mis desdichas: |  | | pero si la causa llega, |  | | tan triste como atrevida, |  | | ¿qué mucho que lleguen ellas? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | VILLANO | |  | | --- | | *(Canta dentro)* | | ¡Qué mal lo ha mirado Ordoño! | 680 | | A la fe que se arrepienta; |  | | porque quien no teme a Dios, |  | | no puede hacer cosa buena. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ah buen hombre, ah labrador! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | VILLANO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Digo que llaman, Teresa, | 685 | | detrás de aquellas carrascas, |  | | y voz de mujer semeja. |  | |  |  | | ¿Quién llama? ¿Quién es? ¿Sos vos? |  | | ¡Voto al sol, que es cosa nueva |  | | vuestro traje en estos montes, | 690 | | que no es a la usanza nuestra! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Más nuevas son mis desdichas |  | | Trújome por esta tierra |  | | un capitán. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LABRADOR | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién lo duda? |  | | Como tiene el amor flechas, | 695 | | a las más engañan plumas. |  | | ¿Cómo diablos os inquieta |  | | tanto en vuestras almohadillas |  | | el tapatán de la guerra? |  | | Pero ¿cómo os deja aquí? | 700 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Por mis desdichas me deja, |  | | que son largas de contar. |  | | Pero, dime, ¿son aldeas |  | | esas grandes caserías, |  | | que dellas parecen peñas, | 705 | | y dellas huertas parecen? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LABRADOR | |  |  | | --- | --- | | Todas son casas que albergan |  | | hombres ricos montañeses, |  | | que se quedaron en ellas |  | | desde el tiempo de los godos; | 710 | | tienen aquí sus haciendas |  | | y son reyes destos montes. |  | | Esa que miráis más cerca, |  | | es de Ramiro de Aibar, |  | | mi amo; esotra más vieja | 715 | | es de Servando Fernández, |  | | estotra es de Mendo Vega, |  | | aquélla es de Ortún Ordóñez; |  | | pero de aquí legua y media, |  | | la de Tello de Meneses, | 720 | | hombre a quien todos respetan. |  | | Allá hallárades amparo, |  | | pero con alguna ofensa |  | | de vuestro honor. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¿Por qué causa? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LABRADOR | |  |  | | --- | --- | | Porque tiene un hijo en ella | 725 | | más galán que Gerineldos, |  | | que no hay moza que no pesca |  | | en todo aqueste, distrito. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Pues mejor será la vuestra. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LABRADOR | |  |  | | --- | --- | | Ramiro de Aibar, mi amo, | 730 | | tiene una hija doncella, |  | | y con ella estaréis bien; |  | | pero trocando la seda; |  | | que no os querrán recibir. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Ninguna cosa desean | 735 | | mis penas sino mudar |  | | el traje. Si alguno hubiera |  | | antes de llegar allá, |  | | por sayal, por tosca jerga |  | | le diera de buena gana. | 740 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LABRADOR | |  |  | | --- | --- | | Conmigo vino Teresa |  | | para ayudarme a cargar |  | | de carrascas la carreta: |  | | hablad con ella; que pienso |  | | que os ayude cuanto pueda. | 745 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Vamos, pues, a donde está. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LABRADOR | |  |  | | --- | --- | | ¡No es mala la diferencia, |  | | pues por un carro de roble |  | | llevo una carga de seda! |  | | *Vanse* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XI** | |
|  | |
| *Otro punto de los montes de León DON NUÑO, con una caja de joyas, solo* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | Sin saber dónde camino, | 750 | | me lleva el justo temor |  | | donde me trujo el amor |  | | o me enseña mi destino. |  | | Mas ya, temor, no imagines |  | | que has de hallar segura tierra; | 755 | | que quien los principios yerra, |  | | ¿cómo ha de acertar los fines? |  | | Necio fue mi atrevimiento |  | | en ayudar la locura |  | | de Elvira, por la hermosura | 760 | | que cegó mi pensamiento; |  | | pero, en fin, ya la dejé, |  | | y por sendas tan incultas |  | | voy, que, al mismo sol ocultas, |  | | ni las penetra ni ve. | 765 | | En mis imaginaciones |  | | no hay rama en esta ocasión |  | | que no sea un rey de León, |  | | y cada rey, mil leones. |  | | Lo que me da más cuidado | 770 | | son las joyas, enemigos |  | | que han de servir de testigos |  | | si soy de su gente hallado. |  | | Y así, cavando la tierra |  | | con esta daga, las quiero | 775 | | esconder; pero primero, |  | | para conocer la tierra, |  | | poner alguna señal. |  | | *(Dan voces dentro)* |  | | Gritos dan. Todo me asombra; |  | | que espanta su misma sombra | 780 | | a quien dice o hace mal. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XII** | |
|  | |
| *MENDO, TELLO, DON NUÑO* |  |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Por aquí, por aquí fue. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | Ellos me buscan a mí. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¿Dónde, Mendo? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Por aquí. | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Él es. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | ¡Muerto soy! ¿Qué haré? | 785 | | Pero detrás destas ramas |  | | será mejor esconderme. |  | | *Huye* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XIII** | |
|  | |
| *TELLO, con una ballesta; MENDO, SANCHO* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Desdicha habemos tenido. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Cómo? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Que ya no parece. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | En parte, por Dios, me huelgo; | 790 | | que es venir a cazar liebres |  | | durmiendo en sus verdes camas, |  | | como caza de mujeres; |  | | y querer matar un oso |  | | es peligro, donde suele | 795 | | burlarse el más alentado, |  | | engañarse el más valiente. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Yo desde lejos quería |  | | tiralle. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Pues no te acerques; |  | | que el ejemplo de Favila | 800 | | aún está en León presente. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Dime: ¿qué te dijo Laura? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué áspid, tigre o serpiente, |  | | qué caimán o cocodrilo, |  | | pisados o heridos, vuelven | 805 | | con tal furia como Laura |  | | contra mi pecho inocente, |  | | diciéndome que yo era...? |  | | ¿Dirélo? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | Dilo. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Alcahuete, |  | | que te llevaba a León | 810 | | para que sus damas vieses; |  | | que te las pintaba a todas |  | | con lisonjeros pinceles, |  | | para moverte a cosquillas |  | | la sangre en la edad que tienes; | 815 | | que yo te ayudaba a hurtar |  | | el trigo; y aunque no miente, |  | | siendo tanta la abundancia, |  | | mucho cuidado parece. |  | | Demás de que ya tu padre, | 820 | | de miserable, no quiere |  | | ni aun darte para vestir, |  | | cuando en ese campo llueve |  | | lana, trigo y aun maná, |  | | siendo por sangre Meneses. | 825 | | Pues ¡a mí, que el otro día |  | | le pedí unos zaragüelles, |  | | me dijo: «Sin ellos te anda, |  | | Mendo, pues camisa tienes; |  | | que con sayo a la rodilla, | 830 | | mis abuelos y parientes |  | | sin zaragüelles andaban |  | | más ligeros y más fuertes»! |  | | Respondíle: «En esos tiempos |  | | eran los aires más leves; | 835 | | pero agora son tan bravos, |  | | que diera risa a la gente». |  | | Añadió que te decía |  | | mil testimonios, y advierte |  | | que la he dado la palabra | 840 | | que no irás eternamente |  | | a la Corte, aunque te llame |  | | el rey por trecientas veces. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Loca debe de estar Laura. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Cuerda o loca, no te quejes | 845 | | de mí si no voy contigo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué es aquello que se mueve? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Allí han sonado las ramas. |  | | El oso es; tira. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Acertéle, |  | | pues se queja. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Lindo tiro! | 850 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SANCHO | |  | | --- | | ¡Lindo flechazo! | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Excelente. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Bien puedes llegarle a ver; |  | | que con yerba presto muere. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Pues no salió tras nosotros, |  | | no hayas miedo que se vengue. | 855 | | Por el corazón le diste. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | Pues llega a verlo. | | *Éntrase MENDO* | | ¿Qué temes? |  | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¡Vive Dios, que has muerto a un hombre! |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Qué me dices? | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Llega a verle. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Sacadle los dos en brazos. | 860 | | *Éntrase SANCHO* |  | | ¡Hay tal desdicha! ¡Hay tal suerte! |  | | ¿Era cazador acaso? |  | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Hidalgo y noble parece. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XIV** | |
|  | |
| *MENDO y SANCHO sacan a DON NUÑO herido; TELLO* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Quién sois, caballero? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NUÑO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay cielo! |  | | Esto mis culpas merecen. |  | | Yo soy... |  | | *(Muere)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Quedése en «yo soy»; | 865 | | lo demás dijo la muerte. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¡Buen talle! | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Gentil vestido! |  | | Los despojos te competen. |  | | ¿Qué habemos de hacer? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Callar: |  | | y al hombre que lo dijere | 870 | | ¡vive Dios que he de cortarle |  | | la lengua! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Señor, pues eres |  | | el dueño deste difunto, |  | | ¿qué haremos dél? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Mendo, hacerle |  | | sepultura en ese arroyo. | 875 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SANCHO | |  | | --- | | ¡Cruel estrella! | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Que llegue |  | | a morir por oso un hombre! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Arrójale, Mendo, y vuelve. |  | | | |
|  | |
| *MENDO y SANCHO meten al difunto* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **XV** | |
|  | |
| *TELLO, solo* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿De qué sirve esconderse de tu flecha, |  | | muerte cruel, pues dondequiera, airada, | 880 | | llamas sin voz, y con tu planta helada |  | | entras donde jamás entró sospecha? |  | | Para esconderse, muerte, no aprovecha |  | | la cortina de púrpura bordada; |  | | porque la mira en la ballesta armada | 885 | | desde que nace el hombre tienes hecha. |  | | Pero este ejemplo, aunque cruel advierte |  | | que fue la muerte deste merecida, |  | | y no por culpa de su triste suerte, |  | | pues claramente da a entender la herida | 890 | | que quien como animal tuvo la muerte, |  | | murió en el traje que vistió la vida. |  | | | |

**Acto II**

|  |  |
| --- | --- |
| **I** | |
|  | |
| *Campo inmediato a la casa de los Tellos LA INFANTA, sola* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | No se cansa, mi fortuna |  | | de engañarme y perseguirme, |  | | pues en mis desdichas firme, |  | | no espero mudanza alguna. |  | | Al hábito labrador | 5 | | incliné mi majestad, |  | | porque en tal desigualdad |  | | desconociese el valor; |  | | pero así me ha conocido, |  | | y ha hecho suertes en mí, | 10 | | como si fuera quien fui, |  | | o supiera lo que he sido. |  | | Serví en el rústico traje |  | | que estoy, para ser ejemplo |  | | de que no hay tan alto templo | 15 | | que el tiempo no humille y baje; |  | | y aunque en la casa en que estaba, |  | | su dueño bien me quería, |  | | una hija que tenía |  | | mis acciones envidiaba: | 20 | | fuerza fue no lo sufrir, |  | | porque no hay más que temer |  | | que una envidiosa mujer |  | | a donde se ha de servir; |  | | que si tantas penas pasa | 25 | | quien por vecina la tiene, |  | | a mayor desdicha viene |  | | quien vive en la misma casa. |  | | La de Tello de Meneses |  | | me dicen que es por aquí. | 30 | | ¡Ay fortuna, si de mí |  | | y de mi honor te dolieses! |  | | Hame puesto un labrador, |  | | que sus locuras me dijo, |  | | miedo con Tello, su hijo, | 35 | | para defender mi honor; |  | | por otra parte, he sabido |  | | que es muy cortés y galán. |  | | ¿Dónde estos serranos van? |  | | ¡Qué dicha hubiera tenido | 40 | | si fueran de su labranza! |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **II** | |
|  | |
| *SANCHO, MENDO, LA INFANTA* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Cuanto a Inés, Sancho, no quiero |  | | obligarte con que espero |  | | en sus desdenes mudanza. |  | | Tengo tan poco favor, | 45 | | que en dejar de pretender |  | | no pienso que pueda hacer |  | | mayor servicio a mi amor. |  | | Si te quiere bien a ti, |  | | yo me rindo; tuya sea. | 50 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Amor me dice que crea |  | | que me favorece a mí. |  | | Y no le falta razón; |  | | que, bailando el otro día, |  | | la dije que la tenía | 55 | | en medio del corazón. |  | | Con esto, en sala, en cocina, |  | | dondequiera que la veo, |  | | se ríe, y muestra el deseo |  | | que a tenerme amor la inclina. | 60 | | Antiyer la pellizqué, |  | | y tal mojicón me dio, |  | | que sin seso me dejó. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Y es favor? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿no lo fue, |  | | si brazo y mano tenía | 65 | | más limpios que están las flores? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Sancho, de tales favores |  | | tengo yo muchos al día. |  | | No tiene hacienda señor |  | | para comprar cucharones, | 70 | | con que me dé coscorrones, |  | | sin tenellos por favor. |  | | ¡Oh qué mal, Sancho, conoces |  | | estas ninfas del fregado, |  | | que, como yeguas en prado, | 75 | | retozan tirando coces! |  | | Yo te la doy, pues estás |  | | desos favores contento. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Quejas oigo, pasos siento. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Quedo, no te informes más. | 80 | | Serrana, que guarde Dios, |  | | ¿dónde bueno por aquí? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | De casa de Aibar salí, |  | | bien le conocéis los dos |  | | donde he servido dos meses. | 85 | | Era importuna mi ama, |  | | y voy buscando por fama |  | | la de Tello de Meneses. |  | | ¿Sois suyos acaso? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Sí. |  | | Y a vos detener el paso | 90 | | no os ha hecho el cielo acaso. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Dicha ha sido para mi |  | | hallar de su casa ente. |  | | Pero de cierta ocasión |  | | traigo mala información. | 95 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Creed que la envidia miente. |  | | Si queréis servir allá, |  | | buen salario os aseguro. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Creedme que lo procuro. |  | | ¿Está lejos? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MEDIO | |  |  | | --- | --- | | Cerca está. | 100 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | ¿Querráme a mí? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué decís? |  | | Tal gracia y talle tenéis, |  | | que la casa mandaréis |  | | si un mes en ella servís. |  | | Sancho, acoto esta mujer; | 105 | | *(Aparte a él)* |  | | a Inés te di. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Soy un necio; |  | | mas por la mitad del precio |  | | pleito te quiero poner, |  | | porque tiene tanta estima, |  | | que para que me la des | 110 | | te daré por ella a Inés |  | | y dos cabritos encima. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | No hay que tratar; ella es mía. |  | | Seguidme, hermosa serrana; |  | | que nunca tan de mañana | 115 | | salió en este monte el día. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Para perder el temor, |  | | de aquí a su casa podréis |  | | contarme lo que sabéis |  | | deste hidalgo labrador: | 120 | | que entretenidos ansí, |  | | no hay camino que se sienta. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Bien decís; estadme atenta; |  | | que no está lejos de aquí. |  | | *Echan a andar y vanse lentamente por una senda que da varias vueltas por el teatro* |  | | Serrana, cuya belleza | 125 | | nació para ser señora |  | | en los palacios del rey |  | | (y no es haceros lisonja), |  | | sabed, ya que nos honráis |  | | con vuestra presencia hermosa, | 130 | | que en las faldas de los montes |  | | de Asturias yace a la sombra |  | | un León, cuyas guedejas |  | | tiembla el moro y el sol dora, |  | | a quien el piadoso cielo | 135 | | restituye la corona |  | | Éste las doradas garras |  | | muestra al África, de forma |  | | que por mil partes le vuelve |  | | las espaldas temerosas. | 140 | | De donde los tuvo ocultos |  | | don Pelayo en Covadonga, |  | | tantos hidalgos descienden, |  | | que están las montañas solas; |  | | pero de los que han quedado, | 145 | | cuyos solares adornan |  | | paveses de antiguas casas, |  | | familias de gente goda, |  | | la de Tello de Meneses, |  | | serrana, es la más famosa, | 150 | | más rica, y por muchas causas |  | | mas respetada de todas. |  | | Cincuenta pares de bueyes |  | | aran la tierra, abundosa |  | | de rubio trigo, que apenas | 155 | | hay trojes que la recojan. |  | | Trepan estas altas peñas |  | | fértiles, cabras golosas |  | | en cantidad, que parece |  | | que otro monte inculto forman. | 160 | | Bajan a ese claro río, |  | | de aquellas nevadas rocas, |  | | a beber tantas ovejas, |  | | que unas a otras se estorban; |  | | que los cristales que encubren | 165 | | las arenas por un hora, |  | | los mismos peces enseñan |  | | envueltos en verdes ovas. |  | | Las rocas llamé nevadas, |  | | no por los hielos de Bóreas, | 170 | | mas porque la blanca lana |  | | hace que no se conozcan. |  | | No hay dehesas, vegas, prados |  | | adonde las vacas coman, |  | | con ser de Tello las mieses | 175 | | diez leguas a la redonda. |  | | Los toros al herradero, |  | | como el fuego los provoca |  | | del hierro abrasado, vienen |  | | novillos y salen onzas. | 180 | | En llegando la vendimia, |  | | de negras uvas rebosan |  | | los lagares, que las cepas |  | | por pardos sarmientos brotan. |  | | Treinta y más hombres las pisan, | 185 | | y el mosto que sus pies moja, |  | | para cuando vino sea |  | | les jura vengar su honra. |  | | Aquí en cárceles de erizos |  | | le dan castañas sabrosas | 190 | | los montes, las anchas vegas |  | | verdes peras, guindas rojas, |  | | con las pálidas camuesas, |  | | nueces, avellanas, moras, |  | | servas, nísperos y almendras, | 195 | | que flores de nácar bordan. |  | | Gansos los arroyos cubren, |  | | aves tan vanas y locas, |  | | que con aquel débil cuello |  | | piensan que en el cielo topan. | 200 | | Los animales morenos |  | | (lenguaje que el mundo toma, |  | | pues llama moreno a un negro, |  | | siendo la color notoria) |  | | salen al ronco instrumento | 205 | | en gran número al aurora, |  | | aunque más parece noche |  | | por donde el camino asombran. |  | | En esos bosques sombríos |  | | con amorosas congojas | 210 | | braman mil sueltos venados |  | | por las ciervas desdeñosas. |  | | Los conejos advertidos |  | | por los vivares se alojan, |  | | y escogen campo las liebres | 215 | | adonde ligeras corran. |  | | Cuando el madroño sangriento |  | | su verde fruta colora, |  | | salir de sus altas cuevas |  | | los osos peludos osan. | 220 | | No menos los jabalíes, |  | | que el verano se remontan, |  | | vienen a buscar hambrientos |  | | las sazonadas bellotas. |  | | Aquí entra bien Tello el mozo, | 225 | | que la fama mentirosa |  | | os ha pintado, diciendo |  | | que cuanto mira deshonra. |  | | Digo que entra, porque suele |  | | con valor y vanagloria | 230 | | matar estos animales, |  | | puesto que a su padre enoja; |  | | que con su sangre a un venablo |  | | de suerte el oro desdora, |  | | que está desta parte el asta, | 235 | | y el acero de la otra. |  | | Es un mancebo galán, |  | | que puede servir de alcorza |  | | tan dulce, que algunas hembras |  | | se le llegan como moscas. | 240 | | Hablar en su cortesía, |  | | es contar granos de aljófar |  | | sobre las flores que el alba |  | | llora en sus cogollos y hojas. |  | | Su entendimiento y blandura, | 245 | | su condición generosa, |  | | para un príncipe nacieron, |  | | que no para gente tosca. |  | | He sido yo de opinión |  | | (que tengo en algunas cosas, | 250 | | aunque labrador, buen gusto, |  | | ni es todo el sayal alforjas) |  | | que, como las frutas, hizo |  | | Naturaleza estudiosa |  | | los hombres agros y dulces; | 255 | | y así, en esta casa agora |  | | Tello el viejo es agro, y Tello |  | | el mozo es dulce. |  | | | |
|  | |
| *Desaparecen* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **III** | |
|  | |
| *Vista exterior de la casa de los Tellos LA INFANTA, MENDO, SANCHO* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | No os pongan |  | | temor, porque el noble viejo |  | | trata de su hacienda sola, | 260 | | y aunque estéis aquí dos años, |  | | sin ser falta de memoria, |  | | no sabrá si le servís, |  | | porque hay doscientas personas; |  | | mas, si fuérades oveja, | 265 | | como sois mujer, señora, |  | | supiera cuándo nacistes |  | | mejor que vuestra parroquia. |  | | El mozo no os hará mal, |  | | porque sus manos y boca | 270 | | compone su entendimiento, |  | | y a sus palabras sus obras |  | | fuera de que es imposible |  | | que los ojos en vos ponga, |  | | respeto de que su padre | 275 | | le quiere dar por esposa |  | | a Laura, a una prima suya, |  | | que es una gallarda moza, |  | | si vuestra hermosura y gracia |  | | que esto diga me perdona; | 280 | | que no habiendo competencia |  | | con los claveles y rosas |  | | de vuestra boca y mejillas, |  | | las suyas blancas y rojas |  | | pueden hacer un invierno | 285 | | primavera deleitosa; |  | | porque de solas las almas |  | | merece ser labradora. |  | | Pero ella y una criada |  | | a esta fuente sonorosa | 290 | | por agua bajan; habladlas; |  | | y a mí, a quien tanto enamoran |  | | esos ojos, dad licencia |  | | que a serviros me disponga; |  | | que en esta ruda corteza | 295 | | vive un alma que os adora, |  | | de quien en tosca materia |  | | seréis vos divina forma, |  | | seréis miel en alcornoque, |  | | letras en persona rota, | 300 | | valor en hombre sin dicha |  | | y ventura en vida corta, |  | | guante de ámbar en villano, |  | | en ruin lengua buena copla, |  | | armas en cobarde pecho, | 305 | | doblón rico en pobre bolsa; |  | | que, desdeñado o querido, |  | | seré vuestro en pena, en gloria, |  | | contento en cualquier estado |  | | que la fortuna me ponga. | 310 | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **IV** | |
|  | |
| *LAURA e INÉS, con dos cantarillas* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Digo que es Mendo y que viene |  | | con Sancho y una mujer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¿Que siempre éste ha de traer |  | | lo que celosa me tiene? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Dadme, señora, esa mano. | 315 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | ¿Qué es esto, Mendo? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Señora, |  | | una hermosa labradora |  | | que hallé en ese verde llano. |  | | Dice que a Aibar ha servido, |  | | y que por cierto disgusto | 320 | | le ha dejado. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Con más gusto, |  | | si dicha hubiera tenido, |  | | en vos me hubiera empleado; |  | | pero yo no merecía |  | | serviros. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | La cortesía, | 325 | | el talle, el traje, el agrado, |  | | el rostro, obliga a estimar, |  | | serrana, el ofrecimiento. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Menos os digo que siento, |  | | y sólo os puede obligar | 330 | | el hallarme en tierra extraña. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | ¿De dónde sois? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | De Castilla. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Mucho el veros maravilla |  | | que vengáis a la montaña. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Es larga historia: después | 335 | | os la quiero referir. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Mejor que para servir, |  | | es para servida, Inés. |  | | *(Aparte a ella)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Recíbela, por tu vida; |  | | que es lástima que se pierda. | 340 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | La condición se me acuerda |  | | de Tello. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Está defendida |  | | con el amor que te tiene; |  | | y ésta es moza honesta y grave, |  | | si no encubre lo que sabe. | 345 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué sé yo de dónde viene? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | ¿Habrá más de despedilla |  | | si al rostro sale traidora? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | *(A la Infanta)* | | ¿El nombre? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Juana, señora. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Tomad esta cantarilla | 350 | | y seguidme; que en la fuente |  | | me contaréis vuestra historia. |  | | | |
|  | |
| *Vanse las tres* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Llevado me ha la memoria. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Yo hallo un inconveniente. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Cómo? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | El viejo, que retozos | 355 | | teme en mozas de despejo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Si no la quisiere el viejo, |  | | servirá para los mozos. |  | | | |
|  | |
| *Vanse* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **V** | |
|  | |
| *Sala en casa de los Tellos AIBAR y BATO; luego, TELLO EL VIEJO y SILVIO* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | AIBAR | |  |  | | --- | --- | | Pienso que negociaremos; |  | | que es muy rico y liberal. | 360 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BATO | |  |  | | --- | --- | | Fortún no ha dado un real: |  | | ¡Bien con él la igreja haremos! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | AIRAR | |  |  | | --- | --- | | Tello es hombre de valor. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BATO | |  | | --- | | ¿Quién da voces? | | | |
|  | |
| *Salen TELLO y SILVIO* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Esto pasa! |  | | Salid, villano, de casa. | 365 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SILVIO | |  |  | | --- | --- | | No tengo culpa, señor; |  | | detén, por Dios, la cayada. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL VIEJO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué tengo de detener? |  | | ¿De mi hacienda habéis de hacer |  | | como de hacienda robada? | 370 | | ¡Vive Dios!... |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SILVIO | |  |  | | --- | --- | | Oye en disculpa... |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL VIEJO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué disculpa puedes darme |  | | que no sirva de enojarme |  | | y de hacer mayor tu culpa? |  | | ¿Cuántos pies tiene un lechón? | 375 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SILVIO | |  | | --- | | Cuatro. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL VIEJO | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿cómo has traído |  | | tres? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SILVIO | |  |  | | --- | --- | | El uno se ha caído; |  | | que ya sé que cuatro son. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Del pecho te he de sacar |  | | ese pie si le has comido. | 380 | | | |
|  | |
| *Huye SILVIO y síguele TELLO EL VIEJO* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BATO | |  |  | | --- | --- | | ¡A buen puerto hemos venido! |  | | Vámonos, señor Aibar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | AIBAR | |  |  | | --- | --- | | Dices bien. ¿Éste es Meneses, |  | | aquel noble y liberal? |  | | No he visto miseria igual. | 385 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BATO | |  |  | | --- | --- | | Menester fue que lo vieses |  | | para poderlo creer. |  | | | |
|  | |
| *Vuelve TELLO EL VIEJO* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién va? ¿Quién sale de aquí? |  | | Vuelva quien es. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | AIBAR | |  |  | | --- | --- | | No entendí, |  | | puesto que te vine a ver, | 390 | | hallarte enojado. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Aibar, |  | | ya sabes que soy tu amigo. |  | | No lo estoy mucho, y contigo |  | | me sabré desenojar. |  | | ¿Qué quieres? ¿A qué venías? | 395 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | AIBAR | |  | | --- | | No más de a verte. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Es engaño, |  | | pues el irte es desengaño, |  | | que alguna cosa querías. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | AIBAR | |  | | --- | | No, cierto. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Di la verdad; |  | | que nuestra amistad se ofende. | 400 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | AIBAR | |  |  | | --- | --- | | Pues a quien tan bien la entiende, |  | | quiero hablarle en amistad. |  | | Tello, a mí me han encargado |  | | recoger algunos días, |  | | por aquestas caserías, | 405 | | la limosna y el cuidado |  | | de la iglesia que labramos |  | | desta vega en la mitad, |  | | con que la dificultad |  | | de ir a la villa excusamos. | 410 | | Ella está ya comenzada; |  | | limosna os vine a pedir, |  | | porque siempre oí decir |  | | vuestra condición honrada |  | | y la liberalidad | 415 | | con que procedéis en todo; |  | | pero entré, y halléos de modo, |  | | que, diciéndoos la verdad, |  | | os tuve por miserable; |  | | que reparar en un pie | 420 | | un hombre tan rico, fue, |  | | Tello, bajeza notable. |  | | Por esto, a la fe, me fui. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Cierto que tenéis razón. |  | | Es ansí mi condición; | 425 | | pero es en mi casa ansí. |  | | Venid, Aibar, a la tarde, |  | | y contad tres mil ducados. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | AIBAR | |  | | --- | | ¿Qué decís? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Que, a estar contados, |  | | no fuera en darlos cobarde. | 430 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | AIBAR | |  | | --- | | ¿Tres mil? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Mirando en un pie |  | | y en otras cosas ansí, |  | | puedo daros lo que os di, |  | | y otros mucho os daré. |  | | Id en hora buena, Aibar. | 435 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | AIBAR | |  |  | | --- | --- | | Tres mil años (y aún es poco) |  | | viváis. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  | | --- | | Id con Dios. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | AIBAR | |  |  | | --- | --- | | Voy loco. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BATO | |  |  | | --- | --- | | ¡Tres mil! ¿Qué más pudo dar |  | | el mismo rey de León? |  | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | AIBAR | |  | | --- | | *(Aparte a Bato)* | | ¿Qué te parece el ejemplo? | 440 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BATO | |  |  | | --- | --- | | Que quien a Dios labra templo, |  | | da beneficio a pensión. |  | | | |
|  | |
| *Vanse AIBAR y BATO* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **VI** | |
|  | |
| *TELLO EL VIEJO, solo* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Cuán bienaventurado |  | | puede llamarse el hombre |  | | que con escuro nombre | 445 | | vive en su casa, honrado |  | | de su familia, atenta |  | | a lo que más le agrada y le contenta! |  | | Sus deseos no buscan |  | | las cortes de los reyes, | 450 | | adonde tantas leyes |  | | la ley primera ofuscan, |  | | y por el nuevo traje |  | | la simple antigüedad padece ultraje. |  | | No obliga poca renta | 455 | | al costoso vestido, |  | | que al uso conocido |  | | la novedad inventa, |  | | y con pocos desvelos |  | | conserva la igualdad de sus abuelos. | 460 | | No ve la loca dama |  | | que por vestirse de oro, |  | | se desnuda el decoro |  | | de su opinión y fama, |  | | y hasta que el arco rompa, | 465 | | la cuerda estira de la vana pompa. |  | | Yo salgo con la aurora |  | | por estos verdes prados, |  | | aun antes de pisados |  | | del blanco pie de Flora, | 470 | | quebrando algunos hielos |  | | tal vez de los cuajados arroyuelos. |  | | Miro con el cuidado |  | | que salen mis pastores; |  | | los ganados mayores | 475 | | ir retozando al prado, |  | | y humildes a sus leyes, |  | | a los barbechos conducir los bueyes. |  | | Aquí las yeguas blancas |  | | entre las rubias reses, | 480 | | las emes de Meneses |  | | impresas en las ancas, |  | | relinchan por los potros, |  | | viéndolos retozar unos con otros. |  | | Vuelvo, y al mediodía | 485 | | la comida abundante |  | | no me pone arrogante; |  | | que no pienso que es mía, |  | | porque, mirando al cielo, |  | | el dueño adoro con humilde celo. | 490 | | Todos los años miro |  | | la limosna que he dado |  | | y lo que me ha quedado, |  | | y diciendo suspiro, |  | | viendo lo que se aumenta: | 495 | | «Siempre me alcanza Dios en esta cuenta». |  | | Voy a ver por la tarde, |  | | ya cuando el sol se humilla, |  | | por esta verde orilla, |  | | el esmaltado alarde | 500 | | de tantas arboledas, |  | | locos pavones de sus verdes ruedas; |  | | y, como en ellas ojos, |  | | frutas entre sus hojas, |  | | blancas, pálidas, rojas, | 505 | | del verano despojos, |  | | y en sus ramas suaves |  | | canciones cultas componer las aves. |  | | Cuando la noche baja, |  | | y al claro sol se atreve, | 510 | | cena me aguarda breve, |  | | de la salud ventaja; |  | | que, aunque con menos sueño, |  | | más alentado se levanta el dueño. |  | | De todo lo que digo | 515 | | le doy gracias al cielo, |  | | que fertiliza el suelo, |  | | tan liberal conmigo; |  | | porque quien no agradece |  | | la deuda al cielo, ni aun vivir merece | 520 | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **VII** | |
|  | |
| *LAURA, LA INFANTA, INÉS, TELLO EL VIEJO* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  | | --- | | *(A Laura)* | | Aquí está señor. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | *(A la Infanta)* | | Bien creo |  | | que se ha de alegrar de verte. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Tengo yo tan poca suerte, |  | | que lo imposible deseo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Esta serrana, señor, | 525 | | que de Aibar criada ha sido, |  | | en tu nombre he recibido; |  | | que muestra a tu casa amor, |  | | y la habemos menester. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Menester a donde hay tantas? | 530 | | ¡A qué cosas te adelantas! |  | | Id con Dios, buena mujer; |  | | que bostezos de señora |  | | tiene mi sobrina ya. |  | | Viendo que la casa está | 535 | | con tanta familia agora, |  | | ¿más costa quiere añadir? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¿Costa una pobre mujer |  | | en tu casa puede hacer, |  | | y que te viene a servir? | 540 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿no es una boca más? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Donde todo está sobrado, |  | | ¿te da una mujer cuidado? |  | | Pienso que enojado estás. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Laura, mira por la hacienda, | 545 | | pues es toda para ti. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Doléos, señor, de mí; |  | | no permitáis que me ofenda |  | | tan grave necesidad, |  | | que se me atreva al honor. | 550 | | Por pobre os pido favor, |  | | aunque tengo calidad. |  | | De limosna habéis de hacer |  | | esto por Dios y por mí. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  | | --- | | ¿Por Dios decís? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Señor, sí. | 555 | | No me permitáis perder. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Jamás por Dios he negado |  | | cosa que pudiese hacer. |  | | Laura... |  | | *(Aparte a ella)* |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | Señor... | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | La mujer |  | | con lágrimas me ha obligado; | 560 | | ella queda recibida. |  | | Vístela, para las fiestas, |  | | de algunas cosas honestas. |  | | Aunque no está mal vestida. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Yo buscaré qué le dar. | 565 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Si tuyo, Laura, ha de ser, |  | | ¿qué me puede a mi deber? |  | | Hazle un vestido sacar |  | | que cueste hasta cien ducados. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Pues tú, que darla temías | 570 | | de comer donde estos días |  | | comen doscientos criados, |  | | ¿la mandas vestir ansí? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Laura, una cosa es guardar |  | | nuestra hacienda, y otra es dar: | 575 | | lo que he guardado le di. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | No habrá vestido en la sierra |  | | que a tanto pueda llegar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Pues bien la puedes comprar, |  | | a la usanza desta tierra, | 580 | | arracadas y corales; |  | | que muestra ser bien nacida. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Juana, ya estás recibida. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Esas manos liberales |  | | beso mil veces, señor. | 585 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Id en buen hora, y guardad |  | | en todo la honestidad |  | | que merece vuestro honor. |  | | | |
|  | |
| *Vanse las mujeres* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **VIII** | |
|  | |
| *TELLO EL VIEJO, solo* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | En mi vida, aunque tratase |  | | a quien jamás conociese, | 590 | | hice bien que le perdiese, |  | | ni mal que no me pesase. |  | | O mal o bien lo emplease, |  | | siempre de hacer la virtud |  | | resultó al alma quietud; | 595 | | aunque conozco también |  | | que del sol del hacer bien |  | | es sombra la ingratitud. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **IX** | |
|  | |
| *TELLO, MENDO, TELLO EL VIEJO* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | Cansado estoy. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Has jugado |  | | dos horas largas y más. | 600 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | Señor me vio. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Dónde vas? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | A vestirme voy, cansado |  | | de jugar un desafío |  | | con dos mozos montañeses. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Es, por vida de Meneses, | 605 | | tu cuidado el propio mío! |  | | ¿Qué jubón es ése, Tello? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Nunca has visto este jubón? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Bravas tus locuras son! |  | | Tente. ¡Una cadena al cuello! | 610 | | ¿Qué te costó? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | No lo sé. |  | | Basta que yo lo he pagado. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Sí, de lo que has trabajado |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | No poco trabajo fue. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Bien dice, pues que sacamos | 615 | | a cuesta cuarenta hanegas |  | | de trigo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | A locuras llegas, |  | | que has de hacer que nos perdamos. |  | | ¿Perdiste al juego? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Perdí. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  | | --- | | ¿Cuánto? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Cien reales no más. | 620 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿No más? ¡Qué gracioso estás! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Esto ¿qué te importa a ti? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿a quién le ha de importar, |  | | si a mí no me importa, loco? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¡Cosas dices!... | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Poco a poco. | 625 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Aún no me dejas hablar? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Ten, en hora mala, seso. |  | | ¡Cien reales! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿De esto te enojas? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Y las mejillas, ¡muy rojas |  | | del sudor y del exceso! | 630 | | Ve, Mendo, y a Laura di |  | | que una camisa le dé; |  | | no se resfríe. |  | | | |
|  | |
| *Vase MENDO* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | No haré, |  | | si estoy delante de ti, |  | | que me haces sudar de pena. | 635 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Falta te harán los cien reales. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Sí harán, porque mis iguales |  | | no han de pedir cosa ajena. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Ven por mil a mi aposento. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Mil años vivas, señor. | 640 | | *Vase TELLO EL VIEJO y vuelve MENDO* |  | | ¡Mil reales! ¡Qué extraño humor! |  | | Y siente que pierda ciento. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | De trigo se los ahorra. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Perdone o de sí me aparte; |  | | que yo no tengo otra parte | 645 | | que mis fortunas socorra. |  | | | |
|  | |
| *Vase MENDO* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **X** | |
|  | |
| *LA INFANTA, con una camisa doblada en un azafate; TELLO* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Querer mi honor resistir |  | | mi fortuna es desvarío, |  | | si el primer servicio mío |  | | es a quien pensaba huir. | 650 | | Diome esta camisa Inés |  | | para Tello, aquel travieso |  | | mozo de tan poco seso, |  | | que destas montañas es |  | | el Júpiter, el Narciso, | 655 | | el galán, el robador... |  | | Mas ya me ha dado el temor |  | | de su condición aviso. |  | | ¡Ay Dios! Allí está... si es él. |  | | Pero es fuerza que lo sea. | 660 | | ¡Buen talle! ¿Quién hay que crea |  | | que habrá mal término en él? |  | | ¡Gentil aire! No parece |  | | de sangre humilde aquel brío. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Quién habla aquí? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Señor mío, | 665 | | quien desde agora os ofrece |  | | una criada, añadida |  | | a las muchas que tenéis. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Vos servís...? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿no lo veis? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿O venís a ser servida? | 670 | | ¿De dónde sois? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¿Yo, señor? |  | | De Castilla. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿De qué tierra? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | De Zamora. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Y ¿a esta tierra |  | | venís a servir? ¿Fue amor? |  | | Que éste tiene gran poder, | 675 | | mayormente en la hermosura. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Siempre he vivido segura |  | | de querida y de querer. |  | | Fue pura necesidad; |  | | pero tengo algún valor, | 680 | | y no era justo, señor, |  | | que mujer de calidad |  | | sirviera en su propia tierra; |  | | que algún tiempo fui servida, |  | | y por no ser conocida | 685 | | vengo a servir a la sierra. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿No hubo desde Zamora |  | | a León gente ninguna |  | | que os hablase y viese? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Alguna |  | | que en tantos lugares mora, | 690 | | y mucha que caminaba. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Y eran ciegos? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | No, señor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Y ¿a nadie le dijo amor |  | | que en vuestros ojos estaba? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | ¿Qué amor? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿No sabéis lo que es? | 695 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | No, cierto. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Movéisme a risa. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Poneos, señor, la camisa; |  | | que así me lo dijo Inés. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Es amor una pasión |  | | que se engendra de los ojos, | 700 | | que ciertos vapores rojos |  | | levantan del corazón; |  | | los cuales, naturalmente, |  | | suben y intentan salir: |  | | por eso es fuerza acudir | 705 | | a los ojos como a fuente. |  | | Miran la persona amada, |  | | y como es el corazón |  | | su patria, aunque ajenos son, |  | | como propia les agrada. | 710 | | Pero, como en ella están |  | | con violencia sus enojos, |  | | vuelven a buscar los ojos |  | | por donde a los otros van. |  | | Entran en quien los envía, | 715 | | y en el camino encontrados, |  | | son cometas abrasados |  | | que encienden la fantasía; |  | | con la cual el corazón |  | | se mueve, y el movimiento | 720 | | engendra el dulce elemento |  | | de aquella imaginación. |  | | Considerad (si os admira, |  | | o me he declarado mal) |  | | el aliento en el cristal | 725 | | de un espejo que se mira; |  | | que desta manera son |  | | estos espíritus rojos |  | | en el cristal de los ojos, |  | | espejos del corazón. | 730 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Yo, señor, como villana, |  | | no entiendo filosofías; |  | | que hasta en las palabras mías |  | | voy por la senda más llana. |  | | No hay en mi tierra ese amor, | 735 | | ni espíritus que le formen; |  | | basta que dos se conformen, |  | | que es lo que entiendo mejor; |  | | que si alguno con mal fin |  | | con espíritus mirara, | 740 | | el cura se los sacara |  | | a puro hisopo y latín. |  | | Advertid que habéis jugado, |  | | y que os podéis resfriar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Antes me temo abrasar | 745 | | que morir de resfriado; |  | | que ya he visto en vuestros ojos |  | | el fuego en que me abraséis. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Teneos, señor, no me deis |  | | con los espíritus rojos; | 750 | | que se me pueden entrar |  | | al corazón si es ansí, |  | | y temo que no haya aquí |  | | quien me los pueda sacar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | No sé si pueda creer | 755 | | de tu estilo y tu presencia, |  | | que es segura tu inocencia. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿en qué lo echáis de ver? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | En que cuando estás hablando |  | | tienes traidora la risa. | 760 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Poneos, señor, la camisa; |  | | que me estarán aguardando. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Cómo te llamas? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¿Yo? Juana. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Juana, seamos amigos; |  | | que a no temer los testigos... | 765 | | Pero venme a dar mañana |  | | esa camisa; que agora |  | | no me la quiero mudar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Yo me vuelvo en cas de Aibar. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | Oye... | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¡Señora..., señora! | 770 | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XI** | |
|  | |
| *LAURA, INÉS* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | ¿Qué es esto? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué puede ser? |  | | ¿No me envías esta moza |  | | con la camisa? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Y retoza |  | | la burra en el alcacer. |  | | *(A la Infanta)* |  | | ¿Quién la camisa te dio? | 775 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | Inés, señora. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | *(A Inés)* | | Pues di, |  | | ¿doyte la camisa a ti, |  | | que estaba ocupada yo, |  | | y dasla a estotra, que apenas |  | | ha entrado en casa? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué quieres? | 780 | | ¿Todas no somos mujeres? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Sí; pero hay malas y buenas, |  | | y a ésta, puede la ocasión, |  | | aunque sea buena, hacer mal. |  | | ¿No había Silvia y Pascuala? | 785 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | No tienes, Laura, razón |  | | en tenerme en poco a mí, |  | | que sabes que tuyo soy. |  | | Aunque culpa te doy |  | | en desconfiar de ti; | 790 | | que con tu merecimiento |  | | nadie se puede igualar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Tello, por el mar de amar |  | | navega mi pensamiento, |  | | y ya sabes tú que celos | 795 | | son las tormentas de amor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Ofendes, Laura, tu honor, |  | | y eres ingrata a los cielos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Juana, si has de estar aquí, |  | | con Tello no has de hablar más; | 800 | | sólo aquello en casa harás |  | | que yo te mandare a ti. |  | | ¿Haslo entendido? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Muy bien, |  | | y eso mismo quiero yo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | Pues esto basta. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Yo... *(Aparte)* No. | 805 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | ¿Qué dices? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Que yo también. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | Entra a mudarte. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Ya es tarde. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | No quiero que estés aquí. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | ¡Ay ojos! ¿Para qué os vi |  | | si ha de haber quien siempre os guarde? | 810 | | | |
|  | |
| *Vanse todos, menos LA INFANTA* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **XII** | |
|  | |
| *LA INFANTA, sola* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Admiración me ha causado |  | | el talle y la discreción |  | | de Tello: prodigios son |  | | y monstruos de un monte helado. |  | | Si aquí me hubiera criado, | 815 | | o su igual nacido hubiera, |  | | presumo que me pudiera |  | | obligar a algún amor; |  | | porque he visto en él valor |  | | que para un príncipe fuera. | 820 | | No por esta variedad |  | | es bella Naturaleza; |  | | que es dar ingenio y belleza |  | | donde falta calidad, |  | | error de su dignidad, | 825 | | si en ella le puede haber. |  | | ¡Qué estilo de proceder! |  | | Pero, ¡ay Dios! ¿En qué pensaba? |  | | Necia estoy; que quien alaba |  | | no está lejos de querer. | 830 | | ¡Cuántos que en las cortes nacen, |  | | envidiaran el valor |  | | de un hijo de labrador, |  | | que ilustre sus partes hacen! |  | | O acaso me satisfacen, | 835 | | por ver que a lucir se alienta, |  | | donde apenas hay quien sienta; |  | | que a quien, donde no pensó, |  | | más que imaginaba halló, |  | | cualquier cosa le contenta. | 840 | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XIII** | |
|  | |
| *TELLO EL VIEJO, FORTÚN, LA INFANTA* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Mucho me pesa de veros, |  | | Fortún, en fortunas tantas. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FORTÚN | |  |  | | --- | --- | | Fianzas me han puesto ansí. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué mal no han hecho fianzas! |  | | A muchos he dado hacienda | 845 | | de la que tengo, a Dios gracias; |  | | mas no he fiado a ninguno. |  | | Pero mirad las mudanzas |  | | de la dicha de los hombres: |  | | toda vuestra hacienda os sacan | 850 | | con dos dedos de papel, |  | | y a mí me escribe esta carta |  | | el rey. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FORTÚN | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿a vos el rey? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Llevamos esta ventaja |  | | los ricos aun a los reyes, | 855 | | que nos escriben y llaman |  | | si tienen necesidad. |  | | ¿Aquí estás, Juana? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Aquí estaba |  | | a ver si me mandas algo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | A Tello luego me llama. | 860 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Perdonad, señor, no puedo; |  | | porque me ha mandado Laura |  | | que jamás hable con él, |  | | pena de perder tu casa. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué necios celos! ¡Qué presto! | 865 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FORTÚN | |  |  | | --- | --- | | Si quiere casarse Laura, |  | | no los tiene sin razón; |  | | que puede dárselos Juana. |  | | En casa de Aibar la vi, |  | | y es muy honesta. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Eso basta; | 870 | | que tengo por imposible |  | | que la honesta yerre en nada. |  | | Llama a Mendo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Está en el monte. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Pues haz que cualquiera vaya |  | | a buscar a Tello luego. | 875 | | | |
|  | |
| *Vase LA INFANTA* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **XIV** | |
|  | |
| *TELLO EL VIEJO, FORTÚN* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | En fin, de vuestras desgracias |  | | tengo, como amigo, pena; |  | | y el modo de remediarlas |  | | es que os llevéis mil ovejas |  | | de la más fértil manada; | 880 | | y si salís destos pleitos, |  | | y tenéis con qué pagarlas, |  | | me las volveréis; si no, |  | | quédense, Fortún, por dadas. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FORTÚN | |  |  | | --- | --- | | Besaros quiero los pies. | 885 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Eso para el rey o el Papa; |  | | que más os debo yo a vos, |  | | que me habéis dado la causa |  | | para daros las ovejas, |  | | que vos a mí con tomarlas. | 890 | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XV** | |
|  | |
| *SANCHO, BENITO, con una pelleja; dichos* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Entra, no tengas temor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BENITO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Más temo aquella cayada |  | | que la vara de un alcalde, |  | | pues no ejecuta la vara |  | | tan presto lo que sentencia. | 895 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  | | --- | | ¿Qué es eso, Sancho? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | No es nada. |  | | Dice Benito que un lobo |  | | le comió ayer una cabra, |  | | y aquí te trae el pellejo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué disculpa tan cansada! | 900 | | Júntanse cuatro serranos, |  | | la que les parece matan, |  | | y ponen la culpa al lobo. |  | | Escrito trae en la cara, |  | | aunque con poca vergüenza | 905 | | lo que comió de la cabra. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BENITO | |  |  | | --- | --- | | No, señor. *(Aparte)* En la barriga. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Ahora bien, de su soldada |  | | se le descuente; que el lobo |  | | no es mi pastor ni es mi guarda. | 910 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BENITO | |  |  | | --- | --- | | Si los perros se descuidan, |  | | ¿quieres tú que sólo salga |  | | contra animal tan feroz? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | No me repliques palabra, |  | | que, ¡vive Dios!... |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BENITO | |  | | --- | | ¡Ay! | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FORTÚN | |  |  | | --- | --- | | Tenéos. | 915 | | Dáisme mil ovejas dadas, |  | | y ¡en una cabra miráis! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿No veis que aqueste me engaña, |  | | y vos venís a pedirme? |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XVI** | |
|  | |
| *LA INFANTA, TELLO* |  |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | Aquí está Tello. | | ¿Qué mandas? | 920 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  | | --- | | Tello, el rey me ha escrito. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿A ti? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Es mucho? ¿De qué te espantas? |  | | Veinte mil ducados pide. |  | | ¿Parécete que es sin causa? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | La necesidad te escribe, | 925 | | que en la guerra de Navarra |  | | y la del moro le aprieta. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Con el moro se trataba |  | | darle a Elvira, y como Elvira, |  | | la desesperada Infanta | 930 | | (que ansí la llaman los versos, |  | | que hasta los muchachos cantan), |  | | se mató, como se dice, |  | | Tarfe ha juntado las armas |  | | de sus amigos, y quiere | 935 | | que del alto Guadarrama |  | | la blanca nieve enrojezcan |  | | aljubas de seda y grana. |  | | Tú has de ir a León. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Yo? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Sí, que es digna esta jornada | 940 | | de tu persona; que yo, |  | | como sabe esta montaña, |  | | no entré en mi vida en la Corte, |  | | ni he visto sus anchas plazas, |  | | sus palacios ni sus reyes; | 945 | | pero ninguno me gana |  | | en el amor y lealtad. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿a qué quieres que vaya? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Besarás la mano al rey, |  | | y llevarásle una carta | 950 | | con cuarenta mil ducados; |  | | los veinte que el rey me manda, |  | | y veinte que yo le doy. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¡Veinte mil veces bien haya |  | | tu condición generosa! | 955 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Tello, ¿su hacienda no gastan |  | | los hombres por sus amigos, |  | | o se pierden por fianzas? |  | | Pues ¿qué amigo como el rey? |  | | Oye aparte. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué me mandas? | 960 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Tienes aquel vestidillo, |  | | con que ir a León pensabas |  | | cuando yo te lo estorbé? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | Sí, señor. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Para que vayas |  | | con él; porque no gastemos | 965 | | en hacerte nuevas galas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Gracia tienes. Das al rey |  | | tanto dinero, y ¡reparas |  | | en un vestidillo mío! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Luego ¿con el rey te igualas? | 970 | | Vamos, Fortún, y ayudadme |  | | a contar este oro y plata. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FORTÚN | |  |  | | --- | --- | | A la fe que como vos |  | | pocos montañeses nazcan. |  | | | |
|  | |
| *Vanse TELLO EL VIEJO, FORTÚN, SANCHO y BENITO* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **XVII** | |
|  | |
| *TELLO, LA INFANTA* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | Espera, Juana. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué quieres? | 975 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Hablarte media palabra. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Y ¿si la dices entera? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Si la digo, que no valga. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | Di presto. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Tus bellos ojos |  | | me tienen cautiva el alma. | 980 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Más has dicho de catorce. |  | | Vete, que nos mira Laura; |  | | que yo te hablaré después. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Por la primera esperanza, |  | | beso tu mano mil veces; | 985 | | que a la fe que yo te traiga |  | | de León... |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Quedo, que viene. |  | | *Vase TELLO* |  | | ¡Qué necio amor me amenaza! |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XVIII** | |
|  | |
| *MENDO, con unas alforjuelas; LA INFANTA* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Para sí)* | | Pues yo no pierdo el juicio, |  | | no sé para qué le guarda | 990 | | alguna poca prudencia |  | | o alguna mucha ignorancia. |  | | Cavando, estaba en el monte, |  | | cuando a los pies de una zarza |  | | me descubre el azadón | 995 | | tanto bien, riqueza tanta, |  | | que vengo fuera de mí. |  | | Esta vez conquisto a Juana... |  | | ¿Qué es a Juana? ¡Voto al sol, |  | | que si estrellas fueran damas, | 1000 | | que alcanzara las estrellas! |  | | Ella está aquí. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¿De qué tratas, |  | | Mendo, en tu imaginación? |  | | ¿Qué tienes, que a solas hablas? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Yo, Juana, tengo mil cosas | 1005 | | en qué pensar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Los que andan |  | | con el ganado en los montes, |  | | o en las viñas con la azada, |  | | ¿tienen qué pensar? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | A veces |  | | cosas por los hombres pasan, | 1010 | | que obligan a pensamientos |  | | y a tratar en cosas altas. |  | | No es todo lo que parece, |  | | y si de ti me fiara, |  | | yo te dijera... |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¿De mí | 1015 | | tienes tú desconfianza? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | Eres mujer. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Las mujeres |  | | mejor los secretos guardan |  | | que los hombres. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | A ser cierto, |  | | pocas hubiera preñadas. | 1020 | | Mas porque en algo me tengas, |  | | ya que con desdén me pagas, |  | | sabe, Juana, que soy hijo |  | | de un gran señor de Alemania, |  | | que pasando en romería | 1025 | | a Santiago desde Francia, |  | | me dejó en cierta señora. |  | | Criéme en esta montaña, |  | | sabiendo solo el secreto |  | | una labradora honrada, | 1030 | | que tiene toda mi hacienda. |  | | Si por dicha fueras, Juana, |  | | bien nacida como yo, |  | | tal estoy, que me casara |  | | contigo; pero no es justo | 1035 | | que si eres de gente baja, |  | | eche a perder mi linaje. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Soy tan nueva en esta casa, |  | | Mendo, que yo no conozco, |  | | hasta que el trato lo haga, | 1040 | | ni los cuerdos ni los locos, |  | | ni los humores que gastan. |  | | ¿Que tú eras loco? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Yo loco? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTE | |  |  | | --- | --- | | Pues ¡tú señor de Alemania! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Del marqués de Pierres soy hijo; | 1045 | | y ya que el amor me manda, |  | | descubrirte mi secreto |  | | (advirtiendo que si hablas |  | | serás causa de mi muerte), |  | | quiero que te satisfagas | 1050 | | de que es verdad lo que digo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¡Con qué locuras me engañas! |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Míranos alguien? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Ninguno. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Pues solo en aquesta caja |  | | tengo... |  | | | |
|  | |
| *(Muestra la de las joyas de LA INFANTA)* |  |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | *(Aparte)* | | ¡Ay Dios! ¡Qué es lo que veo! | 1055 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Piedras y joyas tan raras, |  | | que puedo comprar la hacienda |  | | de Tello. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Una sola basta. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | Pues mira. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué hermosas joyas! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Pues tuyas serán si callas. | 1060 | | Casarémonos los dos, |  | | aunque me ha dicho mi ama |  | | que por los caniculares |  | | ningún discreto se casa. |  | | Mas no importa, yo soy mozo. | 1065 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | *(Aparte)* Aquí es ocasión que valga |  | | la industria a la buena dicha. |  | | Mendo, yo no imaginaba |  | | que eras hombre de valor; |  | | pero por la confianza | 1070 | | que has hecho de mí, yo quiero |  | | pagarte con otra tanta. |  | | No es la infanta de León |  | | mejor que yo: historias largas |  | | quieren tiempo; bien sé yo | 1075 | | que en nobleza no me igualas. |  | | Con más espacio hablaremos. |  | | Pero mira que no traigas |  | | tan públicas esas joyas, |  | | y que yo podré guardarlas. | 1080 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Hablémonos esta noche; |  | | que yo haré lo que me mandas. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | No me tengo de ir sin ellas. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Jura que no dirás nada. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | A mí me importa. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Pues toma, | 1085 | | y dame esa mano blanca. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué puedo negarte, Mendo? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Quiéresme? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¿No es cosa clara? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Mucho? | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | Y más que mucho. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay cielos! |  | | Víctor, Mendo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Víctor, Juana. | 1090 | | | |

**Acto III**

|  |  |
| --- | --- |
| **I** | |
|  | |
| *TELLO EL VIEJO, TELLO, MENDO* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Que tan bien te recibió? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | No te puedo encarecer, |  | | señor, el gusto y placer |  | | que el rey de verme mostró. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿a quién llevan dinero, | 5 | | que reciba mal a quien |  | | se lo lleva? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Dices bien, |  | | y agradecértelo quiero; |  | | que en un librillo he leído |  | | que en un jumento llevaban | 10 | | una diosa que adoraban |  | | con el respeto debido |  | | los que la vían pasar, |  | | hincándose de rodillas; |  | | cuyas altas maravillas | 15 | | pudo el jumento pensar |  | | (como, en fin, era jumento) |  | | que eran por él, y paróse. |  | | Viéndolo el dueño, enfadóse |  | | del soberbio pensamiento, | 20 | | y pegándole muy bien, |  | | le dijo con voz furiosa: |  | | «No es a ti, sino a la diosa»; |  | | que es esto mismo también. |  | | Y así, pidiendo primero | 25 | | del compararte perdón, |  | | las honras del rey no son, |  | | Tello, a ti, sino al dinero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Como quiera que haya sido, |  | | yo he sido del rey honrado, | 30 | | y él con los dos se ha mostrado |  | | liberal y agradecido. |  | | Celebró la carta, y dijo |  | | no sé qué de mi persona: |  | | todo, en efeto, lo abona | 35 | | el valor de ser tu hijo. |  | | «No he visto menos renglones |  | | -dijo- ni más voluntad.» |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Dijo el rey mucha verdad, |  | | si eran las obras razones. | 40 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Informóle un caballero |  | | de ti por discreto modo, |  | | y sabiendo que eras godo, |  | | te hizo, su tesorero, |  | | en muestra de sus deseos. | 45 | | Y no es poca maravilla; |  | | porque en León y en Castilla |  | | se usa tenerlos hebreos, |  | | por ser en esta ocasión |  | | los más poderosos hombres, | 50 | | y dar diferentes nombres |  | | a oficios de estimación. |  | | Repliqué: «Si vos le hacéis |  | | a Tello señor de España, |  | | no vendrá de su montaña: | 55 | | mal su condición sabéis». |  | | Y dijo: «Si ser señor |  | | de su montaña desea, |  | | señor de su tierra sea». |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Aun eso no está mejor; | 60 | | pero, puesto que me obliga, |  | | como es razón que lo entienda, |  | | el darme mi propia hacienda |  | | es casarme con mi amiga. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Horca y cuchillo tenéis | 65 | | desde hoy. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Bravo favor! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Hagamos cuenta, señor, |  | | aunque poco me debéis; |  | | que no quiero que algún día, |  | | si tenéis juridicción, | 70 | | con razón o sin razón, |  | | por alguna falta mía, |  | | uséis desas facultades. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Soy yo falto de juicio? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Por ocupar el oficio | 75 | | haréis dos mil necedades. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Mendo, oyendo tu razón |  | | conozco (aunque para honrallos) |  | | que soy señor de vasallos |  | | en que ya tengo bufón. | 80 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | También es cosa sentada |  | | si lo señor te tocó, |  | | que soy virtuoso yo |  | | en que no me has dado nada. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Oye también mis mercedes. | 85 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Generosa condición! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Alcaide soy de León. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | No sé, Tello, cómo puedes |  | | sin casarte. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Ya te entiendo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué presto que nos pagó | 90 | | tú el llevarlo, el darlo yo! |  | | Los reyes honran pidiendo, |  | | y es temeraria bajeza |  | | de un vasallo dilatar |  | | lo que le mandaron dar | 95 | | Dios y la Naturaleza. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Finalmente, el rey quería |  | | que tú le fueses a ver; |  | | mas viendo que no ha de ser, |  | | dijo: «Pues yo iré algún día | 100 | | a visitarle a su casa; |  | | que le quiero por amigo». |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Eso sí, venga; que os digo |  | | que no se le muestre escasa. |  | | Voyme a poner de señor. | 105 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Pues, cierto que, bien mirado, |  | | que tienes algo mudado |  | | después de aqueste favor. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Oficios mudan las caras? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | Y aun las almas. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Ven conmigo. | 110 | | | |
|  | |
| *Vanse TELLO EL VIEJO y MENDO* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Amor, de mi mal testigo, |  | | si en mis cuidados reparas, |  | | ¿cómo me dilatas, di, |  | | el premio de tanta ausencia? |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **II** | |
|  | |
| *LA INFANTA, TELLO* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Como ve la resistencia, | 115 | | hace amor suertes en mí. |  | | ¿Quién pensara que sintiera |  | | la ausencia de un hombre yo, |  | | y que en viendo que volvía, |  | | tan necia a verle viniera? | 120 | | Mas, ¡ay Dios! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué dicha mía, |  | | Juana, a mis ojos te ofrece? |  | | Agora sí que amanece, |  | | porque sin el sol no hay día. |  | | ¡Qué largos son en León! | 125 | | Era un siglo una mañana, |  | | si es reloj del tiempo, Juana, |  | | la propia imaginación. |  | | Déjame verte; que quieren |  | | mis ojos satisfacer | 130 | | lo que han faltado de ver, |  | | pues verán mientras te vieren; |  | | que no viéndote, no vieron. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¡Buen modo de encarecer, |  | | después que vienen de ver | 135 | | todo lo que ver quisieron! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Yo, mi bien, ¿qué vi sin ti? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | ¿Yo tu bien? | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Esto va bien. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **III** | |
|  | |
| *MENDO, que sale sin que le vean; dichos* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Tú mi bien; que ni ellos ven |  | | sin ti, ni yo vivo en mí. | 140 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Como vienes cortesano, |  | | ya te enseñas a mentir. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | ¡Qué bien se deja venir |  | | el jilguerito a la mano! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Dios sabe, Tello, los miedos | 145 | | que tu ausencia me causó. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Esperábasme? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿no? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Aderézame esos bledos |  | | ¡Vive Dios, que soy perdido! |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¡Ay Juana! | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | ¡Ay rollo! | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué haré? | 150 | | ¿Cómo, mi bien, bajaré |  | | desde señor a marido? |  | | Que conozco tu virtud, |  | | y me ha dicho tu valor |  | | que has de volver por tu honor. | 155 | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Templando se va el laúd. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Si el traje te escandaliza, |  | | yo sé quién es desigual. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Ya pide este huevo sal, |  | | pues que suda en la ceniza. | 160 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, qué traigo de León |  | | para adorno a tu hermosura, |  | | si bien oro y plata pura |  | | cosas inútiles son! |  | | Mas finalmente verás | 165 | | una sarta de corales, |  | | aunque a tus labios iguales, |  | | no serán corales más; |  | | que estarán cuando los venza |  | | de su esmalte el vivo ardor, | 170 | | o de envidia sin color, |  | | o más rojos de vergüenza. |  | | De los extremos recelo, |  | | aunque son de oro también, |  | | que no son de precio en quien | 175 | | es toda extremos del cielo. |  | | Cuatro arracadas de perlas, |  | | de una esmeralda colgadas, |  | | dichosas y desdichadas, |  | | si honrarlas es deshacerlas. | 180 | | Un Cupido de oro, a quien |  | | lleva enfrenado un león: |  | | tú entenderás la ocasión, |  | | Juana, si me quieres bien. |  | | Ricas granas y palmillas | 185 | | para sayas y sayuelos, |  | | color de celos o cielos. |  | | No te truje zapatillas, |  | | y no fue sin advertencia: |  | | que dicen que es libertad | 190 | | en principios de amistad |  | | ganarse tanta licencia. |  | | Con esto sabrás que fue |  | | advertida cortesía; |  | | que quien zapatos envía, | 195 | | presume que ha visto el pie. |  | | En premio desto te pido... |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | No pedirá, ¡vive Dios! |  | | que yo apartaré a los dos. |  | | Señor, un hombre ha venido | 200 | | de León en busca tuya. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Hombre? Luego vuelvo, Juana. |  | | *Vase* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **IV** | |
|  | |
| *LA INFANTA, MENDO* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ah Juana, Juana inhumana, |  | | Juana que el amor destruya, |  | | Juana mudable y traidora, | 205 | | Juana turca, Juana airada, |  | | Juana que, siendo criada, |  | | ya se levanta a señora! |  | | ¡Juana, corales y perlas, |  | | Juana Cupido y palmillas, | 210 | | aunque no con zapatillas: |  | | tal miedo tuvo de hacerlas! |  | | ¡Oh, plega a tus pies ingratos |  | | que crezca de aquí a San Juan |  | | tanto, que en un cordobán | 215 | | no haya para dos zapatos! |  | | ¡Ah falsa! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Déjame aquí; |  | | que se lo diré a señor. |  | | *Vase* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **V** | |
|  | |
| *LAURA, MENDO* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | ¿Qué es esto? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Celos y amor. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | ¿Celos y amor, Mendo! | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Sí. | 220 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | ¿Cómo? | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | De los dos. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¿Por qué? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Porque Tello declarado |  | | quiere a Juana. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Mi cuidado |  | | cierto pronóstico fue. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Dos mil varas de palmillas | 225 | | le ha traído Tello a Juana, |  | | y por falta de badana |  | | no le trujo zapatillas; |  | | treinta sartas de corales, |  | | dos mil perlas, cien Cupidos... | 230 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¡La de los ojos fruncidos! |  | | ¡La honesta! Fiad de tales. |  | | Pues, ¡por vida de mi tío!... |  | | Allá voy; aquí te espera. |  | | *Vase* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Hay cólera, hay áspid fiera, | 235 | | hay toro, hay presa de río |  | | como celos en mujer? |  | | Acabóse: yo he perdido |  | | a Juana; mas justo ha sido, |  | | si Juana de otro ha de ser. | 240 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Salid, honesta, salid. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **VI** | |
|  | |
| *LAURA, LA INFANTA, con su ropa; INÉS, MENDO* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Sin tanta furia, señora; |  | | que yo no he sido traidora, |  | | y que soy noble advertid. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¡Muy bien con esto se prueba! | 245 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | Oye y no me culpes. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Calla. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | La ropa quiero miralla, |  | | para ver si algo me lleva. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | No tienes que buscar más. |  | | Mujer soy de bien, Inés. | 250 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte a la Infanta)* | | Juana... | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | ¿Qué quieres? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Ya ves |  | | que me quedo y que te vas; |  | | y pues te vas, no es razón |  | | que no me vuelvas mi caja. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¡Jesús, Mendo, y con ventaja! | 255 | | ¡Aquestas tus joyas son! |  | | *(Dale la caja)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Vete, Juana; que por ellas |  | | pareceré lindo a alguna; |  | | *(Aparte)* Que está la buena fortuna |  | | en dallas, digo en tenellas... | 260 | | Que alguna me está mirando |  | | que por ellas me quisiera. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | No me perturba ni altera |  | | tu desprecio, imaginando |  | | que me quita la ocasión | 265 | | de mayor desdicha mía; |  | | que ya Tello me tenía |  | | gran parte del corazón. |  | | Adiós, primer sentimiento |  | | de mi desdén; Tello, adiós. | 270 | | *Vase* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **VII** | |
|  | |
| *LAURA, MENDO, INÉS* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Ya estaréis libres las dos |  | | de envidia y celos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Yo siento |  | | la ausencia desta mujer; |  | | pero más que me dé celos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Mendo andaba con desvelos; | 275 | | ya no tendrá que temer |  | | competencias de su amo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Si tú a Sancho quieres |  | | no me preguntes a quién |  | | quiero bien, celo o desamo. | 280 | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **VIII** | |
|  | |
| *TELLO, desatinado; dichos* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¡Cómo! ¿A Juana? ¡Hay tal maldad! |  | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | El loco rompió la gavia. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Quien desta suerte me agravia |  | | no me tiene voluntad. |  | | ¿Por dónde va? ¿Dónde fue? | 285 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Tente, primo; ¿dónde vas? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Quién es? | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | Yo soy. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Aquí estás? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | ¿No me conoces? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | No sé; |  | | que ¡vive Dios!... |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¿En la daga |  | | pones la mano? |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **IX** | |
|  | |
| *TELLO EL VIEJO, dichos* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué es esto? | 290 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Que ha despedido por mí |  | | a Juana, Laura, de celos. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Luego ¿no tengo razón? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Aunque la tengas, no has hecho |  | | sobrina, lo que era justo. | 295 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURA | |  | | --- | | ¿Qué era justo? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Que primero |  | | me hablaras, y yo la diera |  | | algo para su remedio. |  | | Y tú, ¿por qué la inquietabas? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Yo no soy hombre que tengo | 300 | | pensamientos tan humildes. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Tendrás otros pensamientos |  | | desde alcaide de León |  | | a esta parte? Ahora bien, quiero |  | | hacer que vayan tras ella. | 305 | | Y tú no te inquietes, Tello. |  | | *Vase* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **X** | |
|  | |
| *TELLO, LAURA, INÉS, MENDO* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | No la verán más tus ojos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo que no? Ensilla, Mendo, |  | | el overo; que no fío |  | | de mi padre. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Iré yo luego | 310 | | a decirle que te vas. |  | | Ven Inés. |  | | *Vanse LAURA e INÉS* |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Ensilla presto. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Ya señor, voy a ensillar. |  | | | |
|  | |
| *Vase TELLO* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **XI** | |
|  | |
| *MENDO, solo* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Antes que saque el overo, |  | | quiero visitar mis joyas, | 315 | | porque de su luz espero |  | | consolarme de la ausencia |  | | *(Abre la caja)* |  | | de Juana. ¡Ay cielos! ¿Qué es esto? |  | | ¡Vive Dios que es un cordel |  | | que me deja para el cuello! | 320 | | ¡Linda cadena! ¡Oh, qué joya |  | | para un maldiciente necio! |  | | ¡Para quien sin saber nada |  | | habla en todo a todos tiempos! |  | | ¡Oh Juanilla! ¡Oh Juana! ¡Oh sierpe! | 325 | | ¡Oh pícara! A ensillar presto... |  | | Pero mejor fuera a mí, |  | | pues que fui mayor overo. |  | | *Vase* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XII** | |
|  | |
| *En el campo, la INFANTA sola* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Donde mi fortuna quiere, |  | | con inciertos pasos voy, | 330 | | fugitiva de mí misma: |  | | consejo de la razón. |  | | En la paz que yo pensaba |  | | hallé la guerra mayor, |  | | en el sagrado el peligro, | 335 | | y en el miedo la ocasión. |  | | ¡Qué pensó mi pensamiento, |  | | cuando, siendo yo quien soy, |  | | llevó mi memoria a Tello |  | | y a su amor mi inclinación? | 340 | | Nadie de los ojos fíe; |  | | que al más levantado honor, |  | | si no los cierra con llave, |  | | le harán cualquiera traición. |  | | De grande peligro salgo | 345 | | pues con ver que libre estoy, |  | | sospecha el temor que tengo |  | | que le dejo el corazón. |  | | Mas dice mi valor |  | | que en los principios se resiste amor. | 350 | | Pensó Laura que vengaba |  | | de sus celos el rigor, |  | | y diome Laura la vida; |  | | que la ocasión me quitó. |  | | Aunque lágrimas me cuesta, | 355 | | ninguna culpa le doy: |  | | mejor es perder a Tello |  | | que no que me pierda yo. |  | | Si fuera aquél mozo ilustre, |  | | disculpara amor mi error; | 360 | | pero, criado entre ovejas, |  | | no es bueno para león. |  | | Sangre del godo Rodrigo |  | | dicen que el tiempo le dio, |  | | la buena persona el cielo, | 365 | | y el rey Pelayo el blasón: |  | | partes constituyen dignas |  | | para amarle; mas ¡ay Dios! |  | | que dice el amor que sí, |  | | y el rey, mi padre, que no, | 370 | | y en esta confusión |  | | huye la honra y se detiene amor. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XIII** | |
|  | |
| *TELLO, LA INFANTA* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Ten este caballo, Mendo; |  | | que allí la he visto. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay de mí! |  | | | |
|  | |
| *Sale TELLO* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Dónde vas, señora, ansí? | 375 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Más que despedida, huyendo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿De quién? | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | De ti. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | No lo entiendo, |  | | pues que me llevas contigo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | De un poderoso enemigo |  | | voy huyendo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Quién? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Amor. | 380 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Si es amor, ¡tanto rigor, |  | | tal crueldad, tanto castigo! |  | | Vuelve, vuelve, que me envía |  | | mi padre por ti. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | No puedo, |  | | Tello; que me ha dado miedo | 385 | | mi flaqueza y tu osadía. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿de qué descortesía, |  | | Juana, te puedes quejar? |  | | ¿Es más que morir y amar |  | | esta de mi amor locura? | 390 | | Si fue culpa tu hermosura, |  | | ¿en qué me puedes culpar? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Tello, yo no he de volver... |  | | por causas que tú no sabes. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Ya he visto en tus ojos graves | 395 | | que eres principal mujer. |  | | ¿De callar y padecer, |  | | Juana hermosa, te agraviaste? |  | | ¿De honesto amor te cansaste? |  | | Déjame no más de verte; | 400 | | mira que vengo a la muerte, |  | | de un hora que me dejaste. |  | | ¿Qué será, Juana, de mí |  | | si no vuelves? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | No, en mi vida. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Ya está Laura arrepentida: | 405 | | ella me envía por ti. |  | | Dicen que la culpa fui... |  | | Vuelve, Juana, por mi honor; |  | | que mi padre con rigor |  | | me ha reñido tan extraño, | 410 | | que has de ir por su desengaño, |  | | si no quieres por mi amor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo quieres tú que viva |  | | adonde Laura se abrasa? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Tú serás, Juana, en mi casa | 415 | | paloma con verde oliva. |  | | No permitas, vengativa, |  | | que lo pague mi inocencia; |  | | vuelve a honrar con tu presencia |  | | el oriente donde fuiste | 420 | | sol; que de sombras le viste |  | | la soledad de tu ausencia. |  | | ¿Podrás tú, mi bien, sufrir |  | | que muera sin culpa yo? |  | | Porque Laura te ofendió, | 425 | | ¿me tengo yo de morir? |  | | ¿Adónde te quieres ir |  | | con esos pobres despojos, |  | | que no te den mil enojos, |  | | y por el hurto te prendan | 430 | | de un alma, por más que emprendan |  | | negarlo tus dulces ojos? |  | | ¿Dónde irás sin que por ello |  | | te injurien? ¿Quién te ha de ver, |  | | que no diga: «Esta mujer | 435 | | se lleva el alma de Tello»? |  | | Si de la planta al cabello |  | | Laura envidia tu hermosura, |  | | muera Laura en su locura, |  | | piérdase Laura, no quien | 440 | | te estima y te quiere bien |  | | con fe tan honesta y pura. |  | | ¿Cómo, dime, negarás, |  | | si te prenden, que me llevas |  | | el alma, en llegando a pruebas | 445 | | de que tan hermosa estás? |  | | Luego más acertarás |  | | en volver donde me has muerto, |  | | porque es sagrado más cierto |  | | para excusar el castigo; | 450 | | pues mientras estás conmigo, |  | | tendrás el hurto encubierto. |  | | Que estando los dos allí, |  | | pues tú mi alma has de ser, |  | | ninguno echará de ver | 455 | | que estoy sin la que te di. |  | | Viviré yo, Juana, en ti, |  | | aunque sin alma, no ausente; |  | | que quien ama, si no miente |  | | (porque hay amar y hay fingir), | 460 | | eso deja de vivir |  | | que deja de estar presente. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué de maneras de engaños! |  | | ¡Qué de suertes de invenciones, |  | | si de tus dulces razones | 465 | | no resultaran mis daños! |  | | Ejemplos y desengaños |  | | me aconsejan que me aparte; |  | | pero ¿dónde o en qué parte, |  | | pues quise, siendo mujer, | 470 | | no digo, Tello, querer, |  | | sino querer escucharte? |  | | Si las aves no pusieran |  | | el oído a la traidora |  | | voz que engaña y enamora, | 475 | | nunca en la liga cayeran; |  | | si a mí no me enternecieran |  | | los encantos de tu canto, |  | | tarde me rindieras tanto. |  | | Ahora bien, yo soy mujer. | 480 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Qué dices? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Que esto es volver, |  | | aunque de serlo me espanto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Pues ven, mis ojos; que allí |  | | Mendo está con el caballo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay Tello! Obedezco y callo; | 485 | | que manda otro dueño en mí. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Vuelves con tu gusto? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Sí; |  | | pero en fe de tu valor, |  | | que respetarás mi honor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | La luz que en tus ojos veo, | 490 | | sabrá tener el deseo |  | | y reportar el amor, |  | | | |
|  | |
| *Vanse* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **XIV** | |
|  | |
| *Sala en casa de los Tellos TELLO EL VIEJO, LAURA, INÉS* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  | | --- | | ¿Estás loca? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Loca estoy; |  | | y tú lo pareces más, |  | | pues tal licencia le das. | 495 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Yo ¿qué licencia le doy? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¿Tello no es ido, por Juana |  | | con tu licencia? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Él se fue; |  | | porque yo a Sancho envié, |  | | y no a Tello, esta mañana. | 500 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Si Tello tiene mujer, |  | | y tú nuera, dime, tío, |  | | ¿esperar no es desvarío |  | | a que yo lo venga a ver? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Tello, por hacerme gusto, | 505 | | aunque sin pedir licencia, |  | | no porque siente su ausencia |  | | ni para darte disgusto, |  | | fue por Juana; y no hay razón |  | | que digas que es su mujer; | 510 | | porque ¿cómo lo ha de ser |  | | sin calidad? Que no son |  | | tan bajos los pensamientos |  | | de Tello. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Ahora bien, yo soy |  | | desdichada y yo me voy; | 515 | | que, amores o casamientos, |  | | no los tengo de sufrir. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  | | --- | | ¿Dónde vas? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | En cas de Aibar. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  | | --- | | ¿En cas de Aibar? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | A llorar... |  | | y a serville. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Tú a servir? | 520 | | Quien manda treinta criadas |  | | ¿ha de servir? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué he de hacer, |  | | si Tello tiene mujer? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Necedades excusadas. |  | | Mi sobrina, ¿para quién | 525 | | es mi hacienda? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Mendo viene, |  | | y escrito en los ojos tiene |  | | que no ha sucedido bien. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XV** | |
|  | |
| *Entra MENDO* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | Buenas nuevas. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Pareció? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Mejor de otra suerte fuera. | 530 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Pareció Juana en un bosque, |  | | cuyas floridas riberas |  | | cubren dos mansos arroyos, |  | | más que de cristal, de arena; |  | | que ellos propios la levantan, | 535 | | riñendo donde se encuentran. |  | | Viola Tello, y arrojóse |  | | del caballo; así las riendas, |  | | y estuvímonos los dos, |  | | él contemplando la yerba, | 540 | | y yo de los dos hallados |  | | satisfaciones y quejas. |  | | Juana volver no quería; |  | | que dice que la atormentan |  | | celos de Laura, y mi amo | 545 | | la obligaba hasta vencerla; |  | | si bien es verdad, señor, |  | | que las mujeres discretas |  | | obran lo que menos dicen, |  | | quieren lo que más desean. | 550 | | En fin, por fuerza o por gusto |  | | (que esto de alegar la fuerza |  | | las mujeres es lo mismo |  | | que dar la disculpa de Eva), |  | | entre los dos la pusimos | 555 | | en las ancas. La destreza |  | | de Tello a lo cazador |  | | se vio, pues sin ofendella |  | | subió gallardo en la silla; |  | | pero, dejando la senda | 560 | | que viene a casa, del bosque |  | | siguió la inculta maleza. |  | | Ella, para no caer |  | | (que pienso que si cayera |  | | se lastimara en los troncos | 565 | | de aquella intrincada selva), |  | | echóle el derecho brazo |  | | al cuello; y desta manera |  | | se me perdieron de vista; |  | | que llevaba Tello espuelas. | 570 | | Y aunque era entonces Pegaso |  | | el rocín, yo le siguiera |  | | con ansia de ver a Juana, |  | | porque amor y celos vuelan; |  | | pero Tello me decía: | 575 | | «Mendo, quédate o te asienta; |  | | mira que te cansarás.» |  | | Entendíle y di la vuelta. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Desto ¿qué dirás, señor? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Que, como sabe la tierra, | 580 | | Tello buscaría el atajo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Y es muy discreta respuesta; |  | | que no hay atajo en el mundo, |  | | Laura, que más fácil sea, |  | | que llevarse una mujer | 585 | | a donde jamás parezca. |  | | Con esto se ahorra un hombre |  | | de requiebros y promesas, |  | | y de andar, como en los pleitos, |  | | en demandas y en respuestas. | 590 | | Si es el fin el matrimonio, |  | | y el fin los sucesos prueba, |  | | ¡bien haya, amén, el concierto |  | | que no aguardó la sentencia! |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XVI** | |
|  | |
| *TELLO, LA INFANTA* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Llega, y besarás la mano | 595 | | a mi señor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Con vergüenza |  | | de Laura llego. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Éstos son. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Vive Dios, que te quisiera, |  | | Mendo, con esta cayada |  | | hacer cuatro la cabeza! | 600 | | ¿Ves cómo por el atajo |  | | vino? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Y es cosa muy cierta; |  | | pero no le hay sin trabajo. |  | | Mas yo me huelgo que venga... |  | | *(Aparte)* Porque me vuelva mis joyas. | 605 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Juana la mano te besa |  | | por la merced que le has hecho. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Señor, cuando yo ofendiera |  | | a mi señora, era justo |  | | que castigara mi ofensa; | 610 | | pero no, estando inocente. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Sí, si la misma inocencia, |  | | y aun con esas humildades, |  | | se sale con cuanto intenta. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Señora, yo no quería | 615 | | volver; Tello me hizo fuerza. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | *(Aparte a Inés)* | | ¿A fuerza ha llegado el caso? |  | | Para bien las bodas sean. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Calla, malicioso, y mira |  | | que es Juana mujer honesta. | 620 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Quítole su honestidad? |  | | Tello se quedó con ella. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Ahora bien, Laura, por mí |  | | (si es justo que lo merezca) |  | | habéis de hacer amistad. | 625 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | ¿No basta que tú lo quieras? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Juana, abraza a tu señora; |  | | y porque de hoy más no tengas |  | | celos, casemos a Juana. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | No habrá cosa con que pueda | 630 | | estar Laura más segura. |  | | Mendo su marido sea. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Antes de ir por el atajo, |  | | al mismo rey no la dieras, |  | | y ¡a mí me la das agora! | 635 | | No sé, por Dios, si la quiera. |  | | Mas será envite de falso. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | No, Mendo, por Dios; que della |  | | sé que agradece tu amor. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Es verdad, Juana? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | No tengas | 640 | | duda de mi amor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Agora |  | | digo que los celos ciegan. |  | | Mira, Tello, no te espantes |  | | de que yo a Juana no crea; |  | | que como en aquel rocín | 645 | | diste tan larga carrera, |  | | venir a parar en mí |  | | no ha sido poca destreza. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Ahora bien, yo doy en dote |  | | a Juana cincuenta ovejas, | 650 | | dos vacas, cuatro lechones, |  | | y de trigo veinte hanegas; |  | | y a Mendo doy una vara, |  | | pues soy señor desta tierra. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | No me des, señor, oficio, | 655 | | que si no prendo me pierda |  | | (pues en efeto es prender), |  | | y si prendo me aborrezcan. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Ahora bien, trazad la boda. |  | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  | | --- | | *(Aparte a Laura)* | | Con esto segura quedas. | 660 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Juana, una sartén te mando |  | | y una cama de red nueva. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | *(Aparte a la Infanta)* | | ¡Ay Juana, que aunque es de burlas, |  | | siento el casarte de veras! |  | | | |
|  | |
| *Vanse los Tellos, LA INFANTA y LAURA* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **XVII** | |
|  | |
| *MENDO, INÉS* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | ¿Parécete, Mendo, bien | 665 | | de la suerte que me dejas? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Inés, cuando de casarme |  | | te resulte alguna ofensa, |  | | no quieras mayor venganza. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Todos sois desa manera; | 670 | | pero todos os casáis. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Inés, el casarse es fuerza. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿cómo os quejáis después? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | No todos después se quejan; |  | | que muchos aciertan mucho, | 675 | | y otros por su culpa yerran. |  | | No está la paz en castigos, |  | | que deshonran, no remedian, |  | | sino en no querer los hombres |  | | volar por casas ajenas. | 680 | | Regalos guardan lealtad; |  | | debida correspondencia |  | | en la mesa y en la cama |  | | hacen las mujeres buenas. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Bravo casado serás. | 685 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | No quiera Dios que tal sea. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INÉS | |  | | --- | | Pues ¿qué? ¿Manso? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Peor, Inés; |  | | sino que quiera y me quieran, |  | | y que alcance a nuestros hijos |  | | la bendición de la Iglesia. | 690 | | | |
|  | |
| *Vanse* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **XVIII** | |
|  | |
| *Vista exterior de la casa de los Tellos TELLO EL VIEJO, SANCHO* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Ésos, Sancho, no es posible |  | | que sepan que soy señor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Excusarse del rigor |  | | parece cosa imposible. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Otro parece que estoy | 695 | | después que tengo el gobierno. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SANCHO | |  | | --- | | Tierno me pareces. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Tierno? |  | | Verás qué castigos doy. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Tampoco has de ser cruel. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Ya sé yo que la balanza | 700 | | nos enseña la templanza |  | | que hay del cuchillo al cordel. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XIX** | |
|  | |
| *MENDO, con vara de alguacil; VILLANOS* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | No se puede imaginar |  | | la ventura que he tenido. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Pues, Mendo, ¿qué ha sucedido? | 705 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | No acababa de tomar |  | | la vara que veis aquí, |  | | cuando dicen que el rey viene. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  | | --- | | ¿El rey? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Y el que sólo tiene |  | | jurisdicción sobre mí. | 710 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Pues di, ¿quién te dijo a ti |  | | que el rey al monte venía? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | Quien le vio cazar. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Sería |  | | cerca de León, no aquí. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¿No aquí? Pues ese ruido | 715 | | ¿qué piensas que puede ser? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Ya comienza a anochecer, |  | | y debe de haber venido |  | | con ánimo de que seas |  | | su huésped. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Turbado estoy. | 720 | | Mendo, a recibirle voy. |  | | *Vase* |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XX** | |
|  | |
| *MENDO, SANCHO, VILLANOS* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Hola, Sancho! Enciendan teas |  | | por cuantas peñas y partes |  | | tiene este monte, que son |  | | desta humilde habitación | 725 | | los muros y baluartes. |  | | Vos, a buscar frutas frescas. |  | | Tú di a Juana que no salga; |  | | *(A un villano)* |  | | porque aquesta gente hidalga |  | | se muere por villanescas; | 730 | | y ella, por lo remilgado, |  | | les hará conversación. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Parte seguro: ellos son. |  | | Todo se alborota el prado. |  | | | |
|  | |
| *Vanse* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **XXI** | |
|  | |
| *Sala en casa de los Tellos EL REY, DON RAMIRO, los Tellos, CRIADOS, VILLANOS* |  |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Cuándo, señor, merecí | 735 | | tanto honor? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | A conoceros, |  | | Tello, he venido, y a veros |  | | pues vos no me veis a mí. |  | | Vuestro hijo ¿dónde está? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | A vuestros pies, gran señor. | 740 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | REY | |  | | --- | | ¿Sabéis que es mi alcaide? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Honor |  | | tan grande otro ser le da |  | | de aquel que tiene de mí. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | REY | |  | | --- | | ¿No tenéis más? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Hanse muerto; |  | | y estuvieron en lo cierto; | 745 | | que para Tello hay aquí, |  | | y para tantos no había. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | REY | |  | | --- | | ¿No le casáis? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Aquí tengo |  | | una sobrina... |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | Si vengo |  | | a tiempo, servir querría | 750 | | de padrino a mis parientes. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Templad, señor, los favores; |  | | que reyes y labradores |  | | son extremos diferentes. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, qué envidia, Tello, os tengo! | 755 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Señor, por acá se pasa |  | | pobremente. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | A vuestra casa |  | | más pobre que nunca vengo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Pues no lo saldréis de aquí; |  | | que toda os la llevaréis. | 760 | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XXII** | |
|  | |
| *Entra LAURA* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Aquí, gran señor, tenéis, |  | | para que os sirváis de mí, |  | | vuestra pobre labradora. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | REY | |  | | --- | | ¿Es vuestra sobrina? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TEMO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Laura, |  | | señor, mi casa restaura, | 765 | | si vos la casáis agora. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XXIII** | |
|  | |
| *MENDO, SANCHO* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | Mucho me alegro de veros. |  | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  | | --- | | *(Aparte a Mendo)* | | Arrima luego la vara. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDO | |  | | --- | | ¿Yo? ¿Por qué? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Porque está el rey |  | | presente. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | No es de importancia. | 770 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SANCHO | |  | | --- | | ¿Cómo no? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Si un capitán, |  | | de la guerra o de las armas |  | | viene a ver y hablar al rey, |  | | Sancho, ¿quítase la espada? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SANCHO | |  | | --- | | No, Mendo. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿qué más tiene? | 775 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Necio, ¿no ves que es la causa |  | | porque representa al rey, |  | | que es justicia soberana, |  | | y no hay otra en su presencia? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Que una cosa tan delgada, | 780 | | Sancho, represente al rey? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | En eso, Mendo, declara |  | | que no ha de tenerla a donde |  | | pueda estar cosa contraria. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Después que eres escribano, | 785 | | Sancho, a lo de corte hablas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SANCHO | |  |  | | --- | --- | | Y tú ¿no piensas mudar |  | | el ingenio y las palabras? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | No sé, por Dios. Mas ya ponen |  | | la mesa: arrimo la vara | 790 | | por pescar alguna cosa; |  | | que no porque es de importancia. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XXIV** | |
|  | |
| *Unos villanos sacan la mesa, y salen los músicos; dichos. Hay en la mesa una tortilla de huevos y un poco de manjar blanco, y en la tortilla de huevos, una sortija* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Ya está prevenido todo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | Tello será maestresala. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Turbaréme, gran señor. | 795 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Él manda como en su casa. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | REY | |  | | --- | | ¿Quién sois vos? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | El alguacil. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | REY | |  | | --- | | ¿Queréis algo? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Los que tratan |  | | de la salud, comer mucho, |  | | aunque tengan buena gana, | 800 | | dicen que es delito; y vengo |  | | a ver si en tanta abundancia |  | | puedo pescar cualquier cosa. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | REY | |  | | --- | | Buen labrador... | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Es la gracia |  | | de todo el monte. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Y la hambre. | 805 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | REY | |  | | --- | | Tomad. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Por cuánto faltara |  | | manjar blanco? |  | | *(Dale el rey el plato de manjar blanco)* |  | | Parecéis |  | | príncipe que come en farsa. |  | | | |
|  | |
| *(Cantan los músicos)* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | ¿Tortilla de huevos? Bueno. |  | | El gusto me adivinaba | 810 | | quien este cuidado tuvo. |  | | ¿Fuiste tú, Ramiro? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RAMIRO | |  |  | | --- | --- | | En casa |  | | que a nadie conozco, fuera |  | | prevención muy excusada. |  | | No, señor, no he sido yo. | 815 | | | |
|  | |
| *Va el REY a comer, y topa con la sortija en los dientes* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Traigan luego vino y agua; |  | | que ha topado alguna piedra. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Piedra, señor? ¡Cosa extraña! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | Esta sortija conozco. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Entre los huevos estaba | 820 | | sortija? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | Y sortija mía. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Pues ¿deso poco se espanta? |  | | En una morcilla un día |  | | hallé yo toda una sarta |  | | de cuentas, que parecían | 825 | | dentro piñones y pasas. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién hizo aquesta tortilla? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién guisó estos huevos, Laura? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURA | |  |  | | --- | --- | | Juana, señor, los guisó. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | REY | |  | | --- | | ¿Quién es Juana? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Llama a Juana. | 830 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | A prender a Juana voy. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SANCHO | |  | | --- | | ¿Por qué? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Por tortillas falsas, |  | | y porque quebró las muelas |  | | a un rey de tanta importancia. |  | | *(Aparte)* Esta vez cobro mis joyas. | 835 | | ¡Oh ladrona, que le echabas |  | | piedras al rey en los huevos, |  | | como a bestia en la cebada! |  | | *Vase* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | *(Aparte)* Cielo, ¿quién imaginara |  | | que yo viniera a tener | 840 | | tanta pena en esta casa? |  | | *(A Ramiro)* |  | | Esta sortija es de Elvira. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | *(Aparte, a su padre)* | | Señor, hoy prenden o matan |  | | a Juana, si por ventura |  | | piensan que veneno daba | 845 | | al rey en esta sortija. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Veneno! Infame criada. |  | | | |

|  |  |
| --- | --- |
| **XXV** | |
|  | |
| *MENDO, trayendo a LA INFANTA, toda turbada y tapándose la cara* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | Por fuerza habéis de salir. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | INFANTA | |  | | --- | | Déjame, por Dios. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Villana |  | | de Zamora o del infierno, | 850 | | ¿qué es esto que al rey le dabas? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | Tello, dejádmela ver. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¿Para qué encubres la car? |  | | Quita las manos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué veo! |  | | Ya se me estremece el alma. | 855 | | ¿Eres tú, Elvira? ¿Eres tú, |  | | hija, que de mis entrañas |  | | fuiste cuchillo en tu muerte? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | ¡Cosa que fuese la Infanta? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay padre! Si lo es, soy muerto. | 860 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | Elvira, a tu padre abraza, |  | | y agora venga la muerte. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDO | |  |  | | --- | --- | | *(Aparte)* Agora es cuando me manda |  | | freír en aceite el rey. |  | | ¡Ah Juana! Si eres Infanta, | 865 | | destruécame aquel cordel; |  | | que yo te daré la caja. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Tuyas serán todas, Mendo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | Señor, toda nuestra casa |  | | perdona; que no supimos | 870 | | quién era. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | Quise casarla |  | | a su disgusto, y agora, |  | | Tello, la doy la palabra |  | | que sólo a su gusto sea. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Sí será; que estoy casada. | 875 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | REY | |  | | --- | | ¿Casada? ¿Con quién? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INFANTA | |  |  | | --- | --- | | Con Tello, |  | | a quien tu pariente llamas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | REY | |  |  | | --- | --- | | Si no te hubieras casado, |  | | Elvira, yo te casara; |  | | porque no pudiera darle | 880 | | deste servicio otra paga. |  | | Daos las manos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Bien merece |  | | mi amor, mi fe, mi esperanza, |  | | este premio. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO EL V. | |  |  | | --- | --- | | No prosigas; |  | | porque aquí la historia acaba | 885 | | de *Los Tellos de Meneses,* |  | | godos de la antigua España. |  | | | |